सामाजिक मनोविज्ञान

भाग १

(Social Psychology)

लेखक

प्रो० राम बिहारी सिंह तोमर

अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग,

दयानन्द कॉलिज, अजमेर

प्रकाशक

दत्त ब्रदर्स

कचहरी रोड़, अजमेर

प्रकाशक—
प्रकाश चन्द्र जोशी
प्रबन्धकर्ता,
दत्त ब्रदर्स, अजमेर

पुनरावृत्ति
अगस्त १९५९

मूल्य २.५०
(दो रुपया पचास नये पैसे)

प्रस्तावना

सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र के विद्यार्थियो के लिए एक अत्यन्त आवश्यक विषय है । प्राय· प्रत्येक विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम मे सामाजिक मनोविज्ञान का विषय निर्धारित है । साधारण नागरिको को भी इसका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है । आग्ल भाषा मे इस विषय पर अनेक पुस्तके है परन्तु अपने देश के विद्यार्थियो एव नागरिको की पुकार राष्ट्रभाषा हिन्दी की पुस्तको की है । इसी प्रकार का अनुभव करके मैंने इस पुस्तक को राष्ट्रभाषा हिन्दी मे प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । भाषा रोचक एवं सरल है । पारिभाषिक शब्द यथासभव साधारण भाषा से लेने का प्रयत्न किया गया है फिर भी कही कही देवभाषा संस्कृत का सहारा लेना पडा है । पारिभाषिक शब्दो के आग्ल पर्यायवाची शब्द भी स्थान स्थान पर कोष्टक मे देने की चेष्टा की गई है ।

पुस्तक की पाडुलिपि लिखने मे श्री पृथ्वीराज 'नवनीत' एव प्रूफ पढने मे श्री प्रेमराज पीपाडा ने बडा परिश्रम किया है । श्री वशिष्ठ प्रसाद मिश्रा ने मुझे इस पुस्तक को लिखने के लिए बहुत बाध्य किया, इसके लिए मैं उनका बडा कृतज्ञ हूँ । मेसर्स दत्त ब्रदर्स, अजमेर एव केशव आर्ट प्रिंटर्स के प्रबन्धको को क्रमशः पुस्तक के प्रकाशन एव सुन्दर छपाई के लिए धन्यवाद देता हूँ ।

दीपावली २०१३ वि०
ब्यावर (राज०)

राम बिहारी सिह तोमर

विषय-सूची

अध्याय १

मानव-प्रकृति

(Human Nature)

मानव प्रकृति का विश्लेषण बडा दुष्कर है। हम अपने दैनिक जीवन में एक दूसरे के व्यवहार को समझने की बडी चेष्टा करते हैं, परन्तु फल विपरीत ही होता है या यों कहे कि हम जितना मानव व्यवहार को समझने की चेष्टा करते हैं उतना ही वह जटिल दिखलाई पडता है। इतनी कठिनाइयां होते हुए भी मनुष्य ने अपना धैर्य नही खोया है और मानव व्यवहार को समझने की चेष्टायें होती रही हैं।

पशुओं के व्यवहार के आधार पर

मनुष्य समझदार पशु है। अरस्तू ने मनुष्य को सामाजिक पशु (Social animal) कहकर पुकारा है। मनुष्य अन्य पशुओं से केवल बुद्धि अधिक रखता है और इसके आधार पर इसने बडे बड चमत्कार किये हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मनुष्य चाहे जितना भी अपनी बुद्धि के बल पर ऊपर उठ गया हो तथापि वह पशु ही है और उसका व्यवहार भी उन्हीं आधारभूत तत्वो पर आधारित है जिन पर कि निम्न श्रेणी के पशुओं का। इसी धारणा से प्रेरित होकर अनेक मनोवैज्ञानिक पशु पक्षियों के व्यवहार के अवलोकन (Observation) मे जुट गये और अपने परीक्षणों के आधार पर उन्होंने मानव व्यवहार को समझाने की चेष्टा की है।

कुछ विद्वानों ने मानव व्यवहार को प्रतिमान प्रतिक्रियाओं (Pattern Reactions), जैसे ट्रापिज्म (Tropism), प्रतिक्षेप क्रियाओं (Reflex Actions) तथा मूल प्रवृत्तियों (Instincts) के आधार पर आधारित किया है। जो विद्वान मानव व्यवहार को प्रतिक्षेप प्रतिक्रियाओं की शृङ्खला (Chain of Reflex Action) मानते हैं, उन्हें मनोविज्ञान मे यन्त्रवादी (Mechanistic School) कहते हैं। दूसरे समूह के विद्वान मूल प्रवृतिवादी हैं। इनमे सर्व-प्रमुख विलियम मैकडूगल (William McDougall) हैं। आपको प्रमुख

पुस्तक 'सामाजिक मनोविज्ञान' (Social Psychology) है। इन दोनों विचार धाराओं को मिलाकर इन्हें अबुद्धिवादी (Non intellectualists) भी कहते हैं, क्योंकि ये मनोवैज्ञानिक वंशानुसंक्रमण (Heredity) पर अत्यधिक बल देते हैं और उनका कहना है कि मानव व्यवहार पूर्व निश्चित वंशानुसंक्रमण द्वारा प्राप्त गुणों के अनुसार आदेशित होता है।

इसके विपरीत बुद्धिवादी (Intellectualists) मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मानव व्यवहार बुद्धि पर आधारित है। उनका कहना है कि इसमे सन्देह नहीं कि मनुष्य एक पशु है परन्तु यह एक विवेकशील पशु (Rational Animal) है। अतः इस विचित्र पशु को बुद्धि से पृथक् करके कभी नहीं समझा जा सकता। प्रत्येक ऐसे कार्य मे भी, जिसे हम मूल प्रवृत्तियों या वंशानुसंक्रमण के कारण समझते हैं, कुछ न कुछ बुद्धि का अंश रहता है। मस्तिष्क न केवल जागरूक अवस्था मे ही कार्य करता है परन्तु मस्तिष्क का कुछ भाग अचेतन अवस्था मे भी कार्य करता रहता है, उसे मनोवैज्ञानिकों ने अचेतन मस्तिष्क (Unconscious Mind) कहा है।

इन मनोवैज्ञानिकों ने पर्यावरण (Environment) पर भी अत्यधिक जोर दिया है। इनका मत है कि वंशानुसंक्रमण, पर्यावरण[1] की तुलना मे मानव व्यवहार पर नहीं के बराबर प्रभाव डालता है। इस समस्या पर हम पहिले ही विस्तारपूर्वक विचार कर चुके हैं।

कुछ विद्वानों ने पहिले मत को थोडा सा परिवर्तित करते हुए अनुकरण सिद्धान्त बनाया है। उनका कहना है कि मानव व्यवहार सुझाव तथा अनुकरण से चालित होता है। इसका अध्ययन हम आगे करेंगे।

हमने देखा कि मानम व्यवहार को समझने का प्रयत्न कई सिद्धान्तों के आधार पर किया गया है। उनमे से निम्न पर हम क्रमशः विचार करेंगे—

१. ट्रापिज्म तथा प्रतिक्षेप क्रिया सिद्धान्त

२ मूल प्रवृत्तियों का सिद्धान्त

३ सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति का सिद्धान्त

---

[1] देखिये "वंशानुसंक्रमण तथा पर्यावरण" राम बिहारी सिंह तोमर की पुस्तक 'समाजशास्त्र की रूपरेखा' भाग १।

अध्याय २

ट्रॉपिज्म और प्रतिक्षेप क्रिया

(Tropism and Reflex Action)

जब हम निम्न श्रेणी के पशुओं के व्यवहार का अध्ययन करते हैं तो बहुत सी निरन्तर क्रियाएं (Consecutive Actions) बिना अधिक हेर फेर के होते हुए दृष्टिगोचर होती हैं। जब कोई वस्तु नेत्रों की ओर शीघ्रता से आती है तो पलकें झुक जाती हैं, जिसे हम पलक झपकाना (Blinking of the eyes) कहते हैं। चाहे जितनी बार हम ऐसा दोहरायें पलकें प्रथम बार की भाँति झुक जाती हैं। हम दाढ़ी बनाते हैं, हमारा हाथ एक निश्चित प्रकार से बिना चिन्ता के चलता रहता है। गिलहरी अखरोट लेती है, कुछ को एक विशिष्ट ढग से तोडती है और कुछ को जमीन मे गाड देती है। बार बार देने पर भी वह इसी व्यवहार को दोहराती है। पतगे दीपक की ओर बढते चले जाते हैं और अपने प्राण दीपक पर न्योछावर कर देते हैं। ऐसा बार बार होता है।

प्रतिमान प्रतिक्रियाओं का अर्थ

(Concept of Pattern Reactions)

हमने देखा कि कुछ क्रियायें बिना अधिक हेर फेर के सदैव पशुओं द्वारा व्यवहार मे दुहराई जाती हैं। दूसरे शब्दो में हम प्रतिमान प्रतिक्रियायें उन क्रियाओं को कहते हैं जो बिना अधिक हेर फेर के होती हैं। थाउलस (Thouless) ने लिखा है, "इन्हीं अधिक या न्यून अभिन्न क्रियाओं का व्यापक नाम प्रतिमान प्रतिक्रियायें हैं।"[1]

प्रतिमान प्रतिक्रियायें दो प्रकार की होती हैं—(१) वे क्रियायें जो सहज (Innate disposition) पर आधारित होती हैं ट्रॉपिज्म जैसे (Tropisms),

---

[1] "A general name for these more or less uniform actions is pattern reactions." R H Thouless 'General and Social Psychology' Third Edition, p. 18, University Tutorial Press Ltd , London, 1951.

प्रतिक्षेप क्रियायें (Reflex Action) तथा मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts)। (२) वे जो मनुष्य के प्रयत्नों द्वारा बार बार करने एवं पर्यावरण के प्रभाव पर आधारित हैं।

ट्रॉपिज्म (Tropism)

ट्रॉपिज्म का अर्थ (Concept of Tropism)

ट्रॉपिज्म की परिभाषा थाउलस ने इन शब्दों में की है, "ट्रॉपिज्म वह अति सरल प्रकार की योग्य एवं अनुकूल (या लाभप्रद) प्रतिमान प्रतिक्रिया है, जिसे हम इस तथ्य से स्पष्ट रूप से पहिचानते हैं कि प्राणी पर भौतिक या रसायनिक उत्तेजना का सीधा प्रभाव होता है।"[1]

इस प्रकार की प्रतिक्रिया उन पौधों में पाई जाती है जिनकी जड़ें नीचे की ओर पृथ्वी के आकर्षण केन्द्र (Gravitational fled) की दिशा में बढ़ती हैं इसे भूम्यावर्तना (Positive Geotropism) कहते हैं। इसी तरह कुछ पौधों का तना प्रकाश की ओर उगता है इसे सूर्यावर्तना (Positive Heliotrop sm) कहते हैं। उदाहरण स्वरूप कमल के फूल को लीजिये। वह सूर्य के निकलने पर खिलता है और सूर्य के अस्त होने के साथ साथ मुरझा जाता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि साधारण पशु प्राणियों (कीड़े मकोड़े) की गति भी ट्रॉपिज्म है। एक कोष्ट वाले (Unicelıular o ganism) जैसे अजीव सुनार (Protozoon Euglena) प्रकाश की ओर तैरते हैं और मांसमक्खी का डिम्ब (Larva of the blow fly) प्रकाश से अन्धकार की ओर जाते हैं। जो प्रकाश की ओर जाते हैं उन्हें प्रकाशावर्तित (Prositively photoropic) और जो अन्धकार की ओर जाते हैं उन्हें अप्रकाशावर्तित (Negatively photoropic) कहते हैं।

ट्रॉपिज्म (Tropism) के सिद्धान्त के अनुसार इन अन्तरों को यह मानकर समझाने की चेष्टा की गई है कि प्राणी के एक ओर प्रकाश पड़ने से उसकी, प्रकाश पड़ने वाले भाग की, गतिशील इन्द्रियाँ (Locomotor Organs) दूसरे भाग की गतिशील इन्द्रियों से कम सिकुड़ती हैं। इसके कारण प्राणी (Organism) प्रकाश की ओर मुड़ जाता है और जब वह प्रकाश की ओर

---

[1] "The tropism is the simplest form of adaptive (or useful) pattern reaction, distinguished by the fact that it is rigidly determined by the direct action on the organism of physical or chemical stimuli" Thouless, R H. p. ibid.

हो जाता है तो उसके दोनों ओर के भाग पर बराबर प्रकाश पड़ता है। इसी कारण से वह प्रकाश की ओर बढ़ता चला जाता है।

ट्रॉपिज्म के सिद्धान्त की आलोचना
(Criticism of the theory of Tropisms)

ट्रॉपिज्म के सिद्धान्त के द्वारा इस पशु व्यवहार को इतनी सरलता से समझाया गया है, परन्तु यह इतना सरल नहीं है। प्रारम्भ में अवलोकनकर्त्ताओं (Observers) को इस व्यवहार का सीधा सादा नुस्खा (Formula of Tropism) इसलिये ठीक लगा होगा क्योंकि उन्होंने व्यवहार की अन्तिम क्रिया पर ही ध्यान दिया और हर कदम पर विचार नहीं किया। जेनिंग्स (Jennings)[1] ने इस प्रकार के विभिन्न परीक्षण किये और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इतने सरल व्यवहार को भी इस सिद्धान्त द्वारा नहीं समझाया जा सकता। एकदम से मुड़ कर जाना जैसा कि ट्रॉपिज्म के सिद्धान्त द्वारा मान लिया गया है, परीक्षणों मे नहीं पाया गया। इस व्यवहार की प्रतिक्रिया एक निश्चित् प्रकार की है जिसे जेनिंग्स ने अन्वीक्षा विभ्रम-व्यवहार (Trial and Error behaviour) कहा है।

प्रतिक्षेप-क्रिया (Reflex Action)

प्रतिक्षेप क्रिया का अर्थ (Concept of Reflex Action)

थाउलस (Thouless) ने प्रतिक्षेप क्रिया की निम्न परिभाषा दी है, "प्रतिक्षेप क्रिया वह साधारण स्वाभाविक प्रतिमान प्रतिक्रिया है जिसमे क्रिया के द्वारा कोई भी लाभप्रद कार्य किया जाता है।"[२]

प्रतिक्षेप क्रिया के उदाहरण पलक झपकाना, छींक आना और आंख के तारे (Iris) का कम प्रकाश मे फैल जाना और अधिक प्रकाश में बन्द हो जाना है। ये एक प्रकार की ऐसी प्रतिक्रियायें हैं जो एक निश्चित् सेवा करती हैं। नेत्रों की ओर जब कोई वस्तु आती है तो पलकें झुक जाती हैं और इस प्रकार से नेत्रों की रक्षा होती है। नासिका की आन्तरिक झिल्ली (Inner-membrane) मे खुजलाहट को समाप्त करने के लिये छींकें आती हैं और छींकें आने के उपरान्त

---

[1] Jennings, H S. "The behaviour of lower Organisms", Washington, p. 190.

[२] "The reflex is also a simple innate pattern reaction in *which a movement of a servicable kind is carried out*", Thouless, R. H., p. 20, ibid.

सुख का अनुभव होता है। जब प्रकाश अधिक होता है तो आँख के तारे (Iris) का व्यास (Diameter) इस प्रकार कम हो जाता है कि पुतली (Retina) पर कोई हानिकारक प्रभाव न पड़े। इनमें से कोई प्रतिक्रिया चेतन अवस्था में होती है और कोई अचेतन अवस्था में ही हो जाती हैं।

शेरिंगटन ने प्रतिक्षेप क्रिया की परिभाषा करते हुए लिखा है "प्रतिक्षेप क्रियायें वे प्रतिक्रियायें हैं जिनमें प्रारम्भिक प्रक्रिया, एक प्रवाहक के माध्यम द्वारा, किसी नाड़ी (या अवयव) को उस प्रक्रिया को समाप्त करने की शक्ति प्रदान करती है, जब कि इस नाड़ी (या अवयव) में स्वयं कार्य को समाप्त करने की शक्ति नहीं है और प्राकृतिक दशा में न हो उसमें प्रक्रिया प्रारम्भ करने की शक्ति है[1]

प्रतिक्षेप क्रिया क्या है (What is Reflex Action)

१ प्रतिक्षेप क्रिया प्रतिमान प्रतिक्रिया है। (वह प्रक्रिया जो बार बार अभिन्न रूप से प्रथम बार के समान होती है)

२ प्रतिक्षेप क्रिया सहज प्रकृति (Innate disposition) है।

३ प्राणी को इस प्रक्रिया से सदैव लाभ ही होता है।

प्रतिक्षेप क्रिया की कार्य प्रणाली
(Working of the Reflex Action)

एक प्रतिक्षेप क्रिया को तीन ढांचों (Structures) की आवश्यकता होती है। एक अवयव (Organ) वह होता है जो कि उत्तेजना को प्राप्त करता है, उसे प्राप्तकर्त्ता (Receptor) कहते हैं। एक नाड़ी (Nerve) इस उत्तेजना (Stimulus) को उस अवयव (Organ) तक ले जाती है जो कि प्रतिक्रिया करता है। इस उत्तेजना ले जाने वाली नाड़ी को प्रवाहक (Conductor) कहते हैं। तीसरा वह अवयव (Organ) या मांस-पेशी (Muscle) है जो कि प्रतिकार करती है, इसे कार्य साधक (Effector) कहते हैं।

प्रतिक्षेप वृत्त खण्ड (Reflex Arc)

हमने ऊपर देखा कि एक प्रतिक्षेप क्रिया के लिये तीन ढांचों की

---

[1] "Reflexes are reactions, in which there follows on an initiating reaction an end-effect reached through the mediation of a conductor, a nerve itself incapable either of the end effect or, under natural conditions, of the inception of the reaction" Sherrington, C S, 'The Integrative Action of the Nervous System,' London, 1906

आवश्यकता होती है। इन तीनों ढांचों—प्राप्तकर्त्ता (Receptor), प्रवाहक (*Conductor*), और कार्यसाधक (Effector) जो कि एक साधारण प्रतिक्षेप क्रिया (Simple Reflex Action) में सक्रिय भाग लेते हैं—को प्रतिक्षेप वृत्तखण्ड (Reflex Arc) कहते हैं।

साधारण-प्रतिक्षेप क्रिया (Simple Reflex Action)

एक प्रतिक्षेप क्रिया जो कि शेष प्रतिक्षेप क्रियाओं से अलग कर ली जाती है, साधारण प्रतिक्षेप क्रिया (Simple Reflex Action) कहलाती है। दूसरे शब्दों में हम यों कह सकते हैं कि एक उत्तेजना यदि तीनों ढांचों से होकर रुक जाय तो इसे साधारण प्रतिक्षेप क्रिया कहेंगे।

शेरिंगटन (Sherrington) का कथन है कि साधारण प्रतिक्षेप (Simple Reflex) एक काल्पनिक एवं अमूर्त प्रक्रिया है, क्योंकि कोई भी क्रिया एक प्रतिक्षेप वृत्तखण्ड (Reflex Arc) होकर समाप्त नहीं हो जाती बल्कि कई प्रतिक्षेप वृत्तखण्ड लगातार होते रहते हैं।

प्रतिक्षेप-क्रिया-शृंखला (Chain Reflex)

प्रतिक्षेप-क्रिया-शृङ्खला वे लगातार होने वाली प्रतिक्षेप क्रियायें (Reflexes) हैं जो पहली प्रतिक्षेप क्रियापूर्ण होकर दूसरी के लिये उत्तेजना बन जाती है और इसी प्रकार अनेक प्रतिक्षेप क्रियायें एक के बाद दूसरी होती रहती हैं।

उदाहरण के लिये हम एक मेढ़क (Toad) (एक प्रकार का मेढ़क जो कि साँप की तरह का होता है और मक्खी खाता है) को लें। एक मक्खी बैठी है। मेंढक की आंख पर मक्खी का प्रतिबिम्ब पड़ा। मक्खी उत्तेजक (Stimuli) है। इस उत्तेजना को मेढक की आँख ने प्राप्त किया इस प्राप्त की हुई उत्तेजना को एक नस (Nerve) जिह्वा तक ले जाती है। जिह्वा बाहर निकल पड़ती है। यह एक साधारण प्रतिक्षेप क्रिया (Simple Reflex Action) हुई। इसके उपरान्त यही क्रिया दूसरी प्रतिक्षेप क्रिया के लिये उत्तेजना बन जाती है और जिह्वा और आगे बढ़ती है, मक्खी को छूती है, पकड़ती है मुह के अन्दर ले जाती है, और अन्त मे निगल जाती है। इस प्रक्रिया में कई प्रतिक्षेप क्रियायें हुईं। इन प्रतिक्षेप क्रियाओं को हम प्रतिक्षेप-क्रिया शृङ्खला (Chain Reflex) कहते हैं।[1]

[1] Loeb, J., 'Comparative Physiology of the Brain,' London, 1901.

प्रतिक्षेप-क्रिया की आलोचना

(Criticism of the Reflex Action)

प्रतिक्षेप क्रिया (Reflex Action) कई बार चेतन अवस्था मे होती है और उसका सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि प्रवाहक (Conductor) उत्तेजना को पहले मस्तिष्क के पास पहुँचाता है और तत्पश्चात् मस्तिष्क उसे कार्यसाधक (Effector) के पास। परन्तु शरीर की रचना की जितनी सरल व्याख्या की गई है, उतनी सरल वास्तव मे नहीं है। प्रतिक्षेप क्रिया का सिद्धान्त शरीर की मशीन को अति सरल मान कर चला है। परन्तु नवीन शरीरशास्त्रियों ने शरीर की मशीन के ऊपर जो प्रकाश डाला है वह इस सरल सिद्धान्त का अनुमोदन नहीं करता।

प्रतिक्षेप क्रिया तथा ट्रॉपिज्म में अन्तर

(Distinction between Reflex Action and Tropism)

हमने प्रतिक्षेप क्रिया (Reflex Action) और ट्रॉपिज्म का अध्ययन पिछले पृष्ठों मे किया। ये दोनो ही प्रतिमान प्रतिक्रियायें हैं और दोनों को ही किसी न किसी प्रकार की उत्तेजना भौतिक या रसायनिक की आवश्यकता होती है।

इन दोनों मे निम्नलिखित अन्तर है:—

ट्रॉपिज्म (Tropism)	प्रतिक्षेप क्रिया (Reflex Action)
१ ट्रॉपिज्म बुद्धि रहित (Mechanical) क्रिया है।	१. एक प्रतिक्षेप क्रिया बुद्धि रहित भी हो सकती है और बुद्धि सहित भी। जब अचेतन अवस्था मे होती है तब बुद्धि रहित होती है और चेतन अवस्था मे होती है तो बुद्धि सहित।
२. यह घातक और लाभकारी दोनों ही हो सकती है।	२. यह सदैव लाभकारी होती है।
३. इस प्रक्रिया मे एक ही ढाँचा प्राप्तकर्ता (Receptor), प्रवाहक (Conductor), और कार्यसाधक (Effector) होता है।	३. इस प्रक्रिया मे तीन विभिन्न ढाँचे होते हैं।

४ इस प्रक्रिया मे सम्पूर्ण प्राणी (Whole organism) प्रतिकार करता है।	४. इस प्रक्रिया में केवल प्राणी का एक अवयव (Organ) प्रतिक्रिया करता है जिसे हम कार्यसाधक (Effector) कहते हैं।
५ इस प्रक्रिया मे क्रिया चेतन अवस्था मे नहीं होती।	५. इस प्रक्रिया में क्रिया कुछ चेतन अवस्था मे होती है और बुद्धि द्वारा निश्चित होती है।

समानता

१ ट्रॉपिज्म के लिये किसी न किसी प्रकार के भौतिक या रसायनिक उत्तेजक (Stimuli) की आवश्यकता रहती है।	१. प्रतिक्षेप क्रिया मे भी किसी न किसी प्रकार के भौतिक या रसायनिक उत्तेजक (Stimuli) का होना आवश्यक है।

प्रश्न

१. निम्नलिखित का पूर्ण विवरण दीजिये :—

(अ) ट्रॉपिज्म (ब) प्रतिक्षेप क्रिया (स) प्रतिमान क्रियाएँ (द) प्रतिक्षेप क्रिया शृङ्खला (य) प्रतिक्षेप वृत्तखण्ड

(Write detailed account of the following :—

(a) Tropism (b) Reflex Action (c) Pattern Reactions
(d) Chain Reflex (e) Reflex Arc)

२ ट्रॉपिज्म तथा प्रतिक्षेप क्रिया की तुलना कीजिये।

(Compare and contrast Reflex action and Tropism.)

SELECTED READINGS

1. Thouless, 'General and Social Psychology' Chapter II



अध्याय ३

मूल प्रवृत्तियों का सामान्य स्वरूप
(General Nature of Instincts)

प्राणियों मे कुछ प्रवृत्तियां जन्म से ही पाई जाती हैं। इस कारण से इनको सीखने की कोई आवश्यकता नहीं रहती है। मानव व्यवहार तथा पशु व्यवहार मे इस प्रकार के बहुत से व्यवहार पाये जाते हैं जो जन्म से ही होते हैं। उनमे से कुछ पर हम विचार करेंगे।

(१) फेबरे का उदाहरण

फेबरे (*Fabre*) ने दीर्घशृङ्गक प्रजाति की तितली (*Cerambyx*) के व्यवहार का बड़ा सुन्दर चित्रण किया है। यह कीड़ा, कीट डिंब सम्बन्धी (Larval) और कोशितीय (Pupal) का समय, बलूत के पेड़ (Oak tree) के अन्दर बिताता है और बलूत के पेड़ की लकड़ी खाता है। प्रारम्भ मे यह एक अंतड़ी के टुकड़े के समान होता है। यह न देख सकता है, न सुन सकता है और न इसमे कोई बुद्धि ही होती है। फेबरे ने इसको मुंहदार अंतड़ी का एक टुकड़ा (A fragment of intestine with a mouth) कहा है। यह कीड़ा बलूत के पेड़ पर रेंगता हुआ पाया जाता है। फिर बलूत के पेड़ मे एक छिद्र (Hole) बना लेता है और फिर इसी छिद्र मे चला जाता है। इस छिद्र के दरवाजे पर तीन तहों का झिल्लीदार दरवाजा बनाता है। ये तहें खड़िया की तरह होती हैं जिससे बाहर के शत्रु आक्रमण न कर सकें। कमरे मे वह एक कोशित (Pupa) बन जाता है। उस कोशित (Pupa) मे कीड़े का मुख द्वार की ओर होता है। यदि उसका सिर द्वार की ओर न हो तो वह तितली बनने पर मुड़ नहीं पायेगा और उसी मे बंदी होने की सम्भावना रहेगी। कुछ दिनों मे कोशित (Pupa) टूट जाता है और तितली झिल्लीदार द्वारों को तोड़ती हुई पुष्पों का मधुर रस पान करने लगती है।[1]

यह है एक छोटे कीड़े की कहानी, जो नित्यप्रति घटित होती रहती है। इसको देखकर मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है और बुद्धि चकित रह जाती है। पूर्ण क्रिया का अवलोकन करने से पता लगता है कि यह कार्य उस कीड़े ने बड़ी

[1] Fabre, S. H., 'The Wonders of Instinct,' (English Translation) London, 1918.

सतर्कता एव बुद्धिमत्ता से अपने उद्देश्य की पूर्ति करने के लिये किया है और उसने इस कार्य को इतनी पूर्णता से समाप्त किया है कि मालूम पडता है कि उसने कितना अनुभव प्राप्त करके इस कार्य को सीखा होगा परन्तु हम पहले ही बता चुके हैं कि इस कीडे का कोई भी मानसिक स्तर नहीं है और न इसका शारीरिक विकास हो उच्च श्रेणी का है। न तो यह देख ही सकता है और न सुन ही सकता है और न ही इसकी बुद्धि का विकास हुआ है। इसे इस कार्य का कोई पूर्व अनुभव भी नहीं है। न ही किसी ने इसे शिक्षा दी है। इस पर भी कितनी कुशलता से उसने इस कार्य को पूरा किया है। इसी प्रकार कार्य उसकी जाति के अनेक कीडे करते हैं। इसी प्रवृत्ति को जो कि आन्तरिक रूप से कार्य करती है और पशु व्यवहार को निर्देशित करती है, हम मूल प्रवृत्ति कहते हैं।

(२) कीडे मकोडो के उदाहरण

ऐसे कीडों के बहुत से उदाहरण पाये जाते हैं जो अपने अण्डे ऐसे स्थान पर देते हैं जहा कुछ न कुछ उनके पैदा होने वाले कीड़ों को खाने के लिये मिल जायगा। उदाहरणस्वरूप कुछ कीड़े अपने अण्डे सडे हुए मास पर देते हैं। कीडे पैदा होने पर उसी मास को खाते हैं। कुछ कीडे अपने अण्डे किसी विशिष्ट फूल के बीजो (Ovules) मे देते हैं, जिससे कि कीडे पैदा होने पर अपना भोजन प्राप्त कर सकें। अत हम देखते हैं कि सडे मास की दुर्गन्ध या विशिष्ट फूल की सुगन्ध इन कीडों की ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजना देती है और मूल प्रवृत्तियों के कारण ये कीडे अपने अण्डे उन्हीं विशिष्ट स्थानों पर देते हैं।

कुछ कीडे इससे भी कठिन प्रक्रिया द्वारा अपने पैदा होने वाले बच्चों के भोजन की व्यवस्था कर देते हैं। बर (Mason Wasp) अपने अण्डे देने के पहले कुछ कीडों (Caterpillars) को डङ्क मार कर अधमरा कर देता है और फिर उन्हे एक छोटे से गड्ढे मे थोडी सी कीचड या मिट्टी डालकर दबा देता है। उसके ऊपर अण्डे देकर उड जाता है। इसके आगे क्या हुआ? यह बर ने कभी नहीं देखा। अण्डों से बर के बच्चे पैदा होते हैं और ये दबे हुए अधमरे कीडो का ताजा मांस खाते हैं और बडे हो जाते हैं।

(३) निम्न श्रेणी के रीढ की हड्डी वाले प्राणियो के उदाहरण
(Example of lower Vertebrate animals)

(अ) गिलहरी (Squirrel)

एक गिलहरी को पैदा होते ही उसको जाति (Species) को दूसरी गिलहरियों से पृथक् कर दीजिये और सम्पूर्ण पृथक् एव भिन्न पर्यावरण मे

पालिये। इस पर भी जब उसे कड़े छिलके के फल (Nuts) दिये जायेंगे तो वह उनमे से कुछ खायेगी और कुछ काष्ठफल (Nuts) भूमि में गाड़ देगी। यह सब वह उसी प्रकार से करती है जिस प्रकार उसकी जाति की अन्य गिलहरियाँ करती हैं।

(ब) पालतू कुत्ता

कहते हैं कि कुत्ता एक बुद्धिमान पशु है। जब कुत्ता एक शशक (Rabbit) के पिछले भाग को देखता है तो उसके शिकार की मूल प्रवृत्ति जाग उठती है और वह होश हवास खोकर उसके पीछे दौड़ने लगता है और जैसे ही वह अपने शिकार को पास से देखता है, भौंकना शुरु कर देता है। इसका फल स्पष्ट है कि शिकार भाग जाता है, परन्तु कुत्ता ऐसा क्यों करता है ? उत्तर स्पष्ट है कि यह मूल प्रवृत्ति के कारण करता है। उसके पूर्वज झुण्ड मे शिकार करते थे, और भोंक कर अपने साथियों को सचेत करते थे, परन्तु अब पालतू कुत्ता यद्यपि अकेले शिकार करता है तथापि अपनी जाति की भौंकने की वह मूल प्रवृत्ति उसमे अब भी शेष है।

इस प्रकार अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। अब हम मूल प्रवृत्ति शब्द का क्या अर्थ होता है ? इस पर विचार करेंगे।

मूल प्रवृत्ति का अर्थ (Concept of Instinct)

मूल प्रवृत्ति (Instinct) और स्वाभाविक (Instinctive) शब्दों का अत्यधिक प्रयोग किया गया है, परन्तु दु:ख का विषय है कि इस शब्द का अनुपयुक्त प्रयोग विभिन्न अर्थों मे न केवल साधारण लोगो ने किया है बल्कि बड़े २ विद्वानों द्वारा भी किया गया है। इसका परिणाम यह हुआ कि इन शब्दों का वैज्ञानिक अर्थ नष्ट हो गया है। इस पर भी इस शब्द का प्रयोग सामाजिक मनोविज्ञान मे करना ही पड़ता है यद्यपि कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि इस शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। न्यूकोम्ब ने लिखा है, "मूल प्रवृत्तियों का अस्तित्व हो या न हो, हम इस शब्द के प्रयोग का परित्याग केवल इसलिये करेंगे क्योंकि यह एक भ्रान्तिमूलक शब्द है।"[१]

---

१ "Whether instincts do or do not 'exist,' we shall avoid the term simply because it is a confusing one." Newcom,

कुछ भी हो इस शब्द का प्रयोग हो या न हो इसके स्वरूप एवं क्षेत्र को समझे बिना मानव के व्यक्तिगत या समूहिक व्यवहार को नहीं समझा जा सकता। मूल प्रवृत्तियो का विवरण वैसे तो बहुत समय से हो रहा था परन्तु डा० मैकडूगल (McDougall) ने इसका अति सुन्दर विश्लेषण अपनी पुस्तक 'सोशल साइकॉलॉजी' (An Introduction to Social Psychology) मे किया है। यद्यपि उनके विचारों से सब मनोवैज्ञानिक पूर्णतया सहमत नहीं हैं तथापि उनकी परिभाषा को अधिकाश मनोवैज्ञानिकों द्वारा मान्यता दी गई है और सबसे बड़ा कार्य उन्होने यह किया है कि इस शब्द के अर्थ को वैज्ञानिक आवरण पहिनाया है।

मैकडूगल ने मूल प्रवृत्ति की परिभाषा निम्न शब्दों मे की है, 'मूल प्रवृत्ति एक आन्तरिक मन शारीरिक प्रकृति है जो इसके स्वामी के लिये एक निश्चित् वर्ग की वस्तुओं को इन्द्रीयगोचर होने तथा ध्यान देने और इस प्रकार की वस्तु के इन्द्रियगोचर होने पर एक विशेष प्रकार की उद्वेगात्मक उत्तेजना का अनुभव हो तथा इसके सम्बन्ध मे एक विशेष प्रकार का व्यवहार हो या कम से कम इस प्रकार के व्यवहार की आन्तरिक प्रेरणा का होना निश्चित् करता है।"[1]

मैकडूगल ने मूल प्रवृत्तियो की यन्त्र रचना का भी विवरण दिया है। उसके अनुसार प्रत्येक मूल प्रवृत्ति की तीन मानसिक क्रियायें होती हैं। ज्ञानात्मक (Cognitive), उत्तेजनात्मक (Affective), क्रियात्मक (Conative) क्रियायें।

इन तीनों प्रकार की मनः क्रियाओ को, जो कि मन' शारीरिक क्रिया (Psycho-physical process) मूल प्रवृत्तियों के व्यवहार मे होती है, यद्यपि हम देख नहीं सकते तथापि इन क्रियाओ के विषय मे ऐसा विश्वास एव दृढ़ता के साथ कहा जा सकता है कि ये क्रियायें होती हैं। मैकडूगल ने इसकी पुष्टि

T. M., Social Psychology.' p 84 Second impression, 1955, Tavistock Publication Ltd.

[1] "An Instinct is an inherited or innate psychophysical disposition which determines its possessor to perceive, and to pay attention to, objects of a certain class, to experience an emotional excitement of a particular quality upon perceiving an such an object, and to act in regard to it in a particular manner, or, at least, to experience an impulse to such action." McDougall W.,'An Introduction to Social Psychology,' p. 25.

निम्न प्रकार से समझा कर की है। प्रत्येक मानसिक क्रिया के तीन भाग होते हैं। वे इस प्रकार हैं:—

१ ज्ञानात्मक (Cognitive)
२ उत्तेजनात्मक (Affective)
३ क्रियात्मक (Conative)

इसको यों भी कह सकते हैं कि प्रत्येक मूलप्रवृत्ति सर्वप्रथम किसी वस्तु के विषय का ज्ञान कराती है फिर इस ज्ञान के कारण उस वस्तु के प्रति एक प्रकार की उत्तेजना मिलती है और इस उत्तेजना के कारण उस वस्तु को पाने या करने की या इसके विपरीत दूर होने की इच्छा होती है।

हमारा शारीरिक ढांचा भी इसकी पुष्टि करता है। किसी वस्तु के कारण ज्ञानेन्द्रिय उत्तेजित होती है और यह उत्तेजना मस्तिष्क तक मस्तिष्क सम्बन्धी ज्ञान तन्तुओं (Sensory nerves) द्वारा पहुँचती है और फिर एक व्यवस्थित एवं सुसम्बन्धित प्रेरणाओं की धारा को बाहर ले जाने वाली नाड़ियाँ (Effe ent nerves) कार्यशील अवयवों या मांसपेशियों तक पहुँचाती हैं।

मन प्रक्रिया (Psychical process) की ज्ञानात्मक क्रिया (Cognitive process) को मान लेना इसलिये उचित है कि ओजस्वी उत्तेजना (Nervous excitation) मस्तिष्क के उस भाग में होती है जिसकी उत्तेजना के कारण ज्ञान तन्तुओं का कार्य प्रारम्भ होता है और उत्तेजनात्मक क्रिया (Affective process) का मान लेना इसलिये उचित है कि प्राणी किसी कार्य के करने के पूर्व उद्वेगात्मक उत्तेजना का अनुभव करता है। कई बार इन उद्वेगों के लक्षण स्पष्टतया दिखलाई भी पड़ते हैं और क्रियात्मक क्रिया (Conative process) का मान लेना इसलिये भी उचित है कि प्रत्येक मूल प्रवृत्ति के जागृत होते ही और उद्वेग उठते ही प्राणी उस कार्य को करने के लिये प्रयत्नशील हो जाता है। या हम यों कह सकते हैं कि यह क्रिया तब तक रोकी नहीं जा सकती जब तक कि पूरी न हो जाय या अन्य शक्तिशाली प्रवृत्ति को उत्तेजित न कर दे या प्राणी अपने सतत एवं अटूट प्रयत्नों के फलस्वरूप शक्तिहीन न हो जाय। किसी कार्य को करने के पूर्व हमें किसी वस्तु को देखकर ज्ञानात्मक भाव उत्पन्न होता है और यह ज्ञानात्मक भाव किसी न किसी उद्वेग द्वारा अनुगर्भित होता है और हर उद्वेग एक मूल प्रवृत्ति व्यवहार को जन्म देता है।

कुछ अन्य विद्वानों द्वारा मूल प्रवृत्तिकी परिभाषायें

जिन्सबर्ग (Ginsberg) लिखता है, "मूल प्रवृत्तीय व्यवहार उस न्यून या अधिक जटिल कार्यशृङ्खला या व्यवहार का द्योतक है जो कि प्रजाति के लिये

उन हितकर निश्चित् उद्देश्यों का अनुकूलन करते हैं जो कि वंशगत निश्चित् होते हैं और व्यक्तिगत प्राणी के पूर्व अनुभव से स्वतन्त्र होते हैं।" [1]

डा० पेखाम और मिसेज पेखाम मूल प्रवृत्ति की परिभाषा निम्न शब्दों में करते हैं, 'मूलप्रवृत्ति शब्द के अन्तर्गत हम उन सब जटिल कार्यों को लेते हैं जो कि बिना किसी पूर्व अनुभव के उसी प्रकार से किये जाते हैं जिस प्रकार से उस लिंग और प्रजाति के सब सदस्यों द्वारा किये जाते हैं।" [2]

किरबी और स्पेन्स (*Kirby and Spence*) लिखते हैं, 'पशुओं की मूल प्रवृत्तियों को हम वे विशेष गुण कहते हैं जो सृजनकर्त्ता द्वारा उनको प्रदान किये जाते हैं जो शिक्षा, अवलोकन या अनुभव से पूर्ण स्वतन्त्र होते हैं और जिनके द्वारा वे कुछ ऐसे निश्चित कार्य, जो कि प्राणी की भलाई एवं उसकी जाति की रक्षा के लिये होते हैं, समान रूप से करने के लिये प्रेरित करते हैं।" [3]

कुछ यन्त्रवादी मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मूल प्रवृत्ति एक प्रकार से प्रतिक्षेप शृङ्खलायें (Chin Reflexes) होती हैं। हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) इसी मत का प्रतिपादक है यह कल्पना मात्र है। हर्बर्ट स्पेन्सर के विचार की मनोवैज्ञानिकों ने तीव्र आलोचना की है। इसके विषय में विस्तार-पूर्वक हम आगे विचार करेंगे।

---

[1] "The term instinctive activity indicates certain more or less complicated trains of movement, which are adapted to certain ends useful to the race, which are congenitally determined and are independent of previous experience by the individual organism " Ginsberg, M., 'The psychology of Society ' p 1, Methuen and Co Ltd , London, Eighth Edition, 1951.

[2] " Under the term 'instinct' we place all complex acts which are performed pervious to experience and in a similar manner by all members of the same sex and race." Dr Peckham and Mrs. Peckham

[3] "We may call instincts of animals those faculties implanted in them by the Creator, by which, independent of instruction, observation or experience, they are all alike impelled to the performance of certain actions tending to the well-being of the individual and the preservation of the species".

—Kirby and Spence.

मूल प्रवृत्तियों की विशेषताएँ (Characteristics of Instincts)

हमने संक्षेप मे मूल प्रवृत्तियो के स्वरूप पर विचार किया। अब हम मूल प्रवृत्तियो की विशेषताओं पर प्रकाश डालेंगे। वे निम्न हैं —

(१) अनुकूलता की प्रवृत्ति (Adaptive Character)

प्रत्येक मूल प्रवृत्ति मे पूर्व निश्चित परिस्थिति से अनुकूलता की प्रवृत्ति रहती है, जैसे तितली का कीड़ा (Cerambyx grub) कितनी सुन्दरता से अपनी परिस्थिति के अनुसार अनुकूलता करता चला जाता है, परन्तु इस अनुकूलता को हमे जान बूझ कर बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य न समझना चाहिये क्योंकि उस कीड़े में कोई बुद्धि नहीं होती और वह जो कुछ भी करता है उसी प्रकार से उसकी जाति के अन्य कीड़े भी करते हैं। तात्पर्य यह है कि मूल प्रवृत्ति मे अनुकूलता की वह प्रवृत्ति पाई जाती है जो इस जाति के सारे सदस्यों के लिये पूर्व निश्चित होती है।

(२) मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं (Instincts are innate)

मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं। इनको सीखने की हमे कोई आवश्यकता नहीं होती। दो प्रमुख कारणों से, एक तो यह कि मूल प्रवृत्तियाँ एक जाति (Species) में सामान्य रूप से पाई जाती हैं और दूसरी यह कि प्रथम बार में कार्य बड़ी ही कुशलता से होता है।

हम जन्मजात इन प्रवृत्तियों को तब ही मानेंगे जब कि एक जाति के सदस्यों का व्यवहार एकसा हो, परन्तु उन पर किसी और बात के कारण व्यवहार की समानता न आई हो। कई बार अनुकरण या शिक्षा से पशुओं या मनुष्यों का व्यवहार समान हो सकता है। बहुत समय तक इन समानताओं को सामाजिक तत्वों के कारण बताया जाता था, परन्तु परीक्षण (Experiment) तथा अवलोकन (Observation) दोनों ने ही सिद्ध कर दिया है कि एक जाति के सदस्यों मे समान व्यवहार सामाजिक प्रभाव के कारण ही नहीं होता जैसे तितली के कीड़े का उदाहरण हम देख ही चुके हैं। इसी प्रकार से हमने गिलहरी के उदाहरण पर भी विचार किया। यद्यपि गिलहरी को उसकी जाति की अन्य गिलहरियों से जन्म के बाद ही पृथक् कर दीजिये परन्तु उसमें वे गुण बिना सिखाये या देखे ही आ जायेंगे जो कि उसकी जाति में जन्म से ही पाये जाते हैं।

भूख लगने पर छोटा बच्चा पैदा होने के उपरान्त ही चिल्लाने लगता है। एक कुत्ते का बच्चा पानी मे प्रथम अवसर पर ही तैरने लगता है। चिड़ियों के

बच्चे बिना शिक्षा के उड़ने लगते हैं। ये सारे गुण उनमें जन्मजात होते हैं। अतः अनेक उदाहरण इस प्रकार के दिये जा सकते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि मूल प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं।

(३) नवीन परिस्थितियों में अति न्यून परिवर्तन

(The smallest of the extent to which they can be modified to meet with novel factors in the situation)

मूल प्रवृत्यात्मक क्रियाओं में बहुत ही कम परिवर्तन नई परिस्थिति में हो सकते हैं। एक जाति के सदस्यों के लिये निश्चित परिस्थितियाँ होती हैं और यदि इन पूर्व निश्चित् परिस्थितियों में कोई अन्तर हो जाय तो मूल प्रवृत्तियाँ कोई विशेष परिवर्तन करके अनुकूलन नहीं कर सकती। वही प्राणी जो कि इतनी अद्भुत क्रियाओं द्वारा अपनी पूर्व निश्चित् परिस्थिति को कुशलता-पूर्वक निभाता है, तनिक भी परिवर्तन होने पर सारी कला भूल जाता है और कई बार यहाँ तक होता है कि वह अपने प्राण भी दे देता है।

यदि मधुमक्खियों का छत्ता जहाँ पर लगा हो उस जगह से हटा कर थोड़ी दूर पर लगा दिया जाय या छत्ते के द्वार को दूसरी ओर कर दिया जाय तो बाहर गई हुई मधुमक्खियाँ पुराने स्थान पर ही लौटेंगी और वे घूम घूम कर मरजायँगी बजाय इसके कि उस छत्ते में जो कि नई स्थिति में है, घुस जायें।

[1] फेबरे ने लिखा है कि सरल-चीड़-संघात्री पदातिक (Pine processionary caterpillar) की कतार को तोड़ कर उसके दोनों सिरों को उसने जोड़ दिया। इस परिवर्तन के कारण ये सात दिन तक बिना भोजन पाये गुलदस्ते के चारों ओर गोले में चक्कर लगाते रहे। जब वह गोला (Ring) टूट गया और कतार बन गई तब वे अपने घोंसले (Nest) तक पहुँच सके। इसी प्रकार से पैकाम्स[2] ने ततैये (Wasp) पर परीक्षण किये और अवलोकन किया कि वह पहले अपने नीड़ (Nest) का निर्माण करता है और इसके उपरान्त कीडे (Caterpillar) को ढूढता है और डङ्क मारता है एवं घसीट कर अपने घोंसले तक ले जाता है। कई बार ऐसा देखा गया कि शिकार नीड़ से बहुत दूर होता है और उसे नीड़ तक लेजाने में बहुत समय लगता है। इस कारण से वह शिकार को विवश होकर छोड देता है यद्यपि उसके पास अति सरल मार्ग है कि वह अपना नीड़ शिकार के निकट बना ले। इस प्रकार यह विदित

---

[1] Fabre, 'The Wonders of Instict'

[2] Peckhams, G W. and E. G., 'On the Instincts and habits of solitary wasps', Madison Wis, 1898.

हुआ कि पूर्व निश्चित परिस्थिति के अतिरिक्त नवीन स्थिति से अनुकूलन करने में प्राणी असमर्थ रहता है।

(४) सम्पूर्ण जाति में सामान्य रूप से समान गुण पाये जाते हैं
(Universality among members of the same species)

मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार एक जाति (Species) के सब सदस्यों में सामान्य रूप से पाये जाते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि यह व्यवहार सीखने से नहीं परन्तु जन्मजात होते हैं। यदि हम प्राणी विशेष को उसके अन्य सदस्यों से पृथक् करदें और फिर उसके व्यवहार को देखें तो वह व्यवहार वैसा ही होगा जैसा कि उस जाति के अन्य सदस्यों का होता है। इस पर स्थान इत्यादि का प्रभाव नहीं होता।

(५) प्रथम क्रिया में ही अद्भुत पूर्णता पाई जाती है
(The remarkable degree of prefection of their first performance)

मूल प्रवृत्ति व्यवहार जब प्रथम बार ही होता है तब ऐसा झलकता है कि करने वाला बड़ा ही बुद्धिमान एवं कुशल है क्योंकि कार्य का प्रत्येक अंग बड़ी निपुणता से किया जाता है। एक बतख (Duck) का बच्चा जब पानी में प्रथम बार ही उतारा जाता है तो शान से तैरता दिखलाई पड़ता है। चिड़िया का बच्चा अपने आप पर फड़फड़ा कर उड़ने लगता है। अतः इन क्रियाओं में अद्भुत पूर्णता पाई जाती है।

इस पर भी हमें अतिशयोक्ति (Exaggeration) से बचना चाहिए। प्रथम बार ही में सदैव अद्भुत पूर्णता नहीं होती है। इसके कई उदाहरण हैं। एक चिड़िया का बच्चा प्रथम बार नीड़ छोड़ता है तो इतना अच्छा नहीं उड़ता जितना कि वह कुछ दिनों बाद उड़ता है, परन्तु प्रथम बार में इतना अवश्य उड़ लेता कि पृथ्वी पर गिरने से बच जाये। यह उसी प्राणिशास्त्रीय आवश्यकता है और यदि ऐसा न होता तो चिड़ियों के बच्चे जो कि पृथ्वी से काफी ऊपर उत्पन्न होते हैं, अपनी पहली ही उड़ान में मर गये होते।

अभी तक यह निश्चित नहीं हो पाया है कि उन्नति अभ्यास के द्वारा होती है या परिपक्वता (Maturity) के कारण।

(६) मूल प्रवृतियों का एक लक्ष्य होता है
(The instincts have always an end in view)

प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है। जैसा कि हमने देखा किसी वस्तु का बोध होने के कारण एक विशिष्ट प्रकार का उद्वेग उत्पन्न

होता है और यह उद्वेग एक विशिष्ट क्रिया करने के लिये उत्तेजित करता है। यह लक्ष्य करीब करीब पूर्व निश्चित होता है।

मूल प्रवृत्ति और प्रतिक्षेप क्रिया
(Instinct and Reflex Action)

(अ) क्या मूल प्रवृति प्रतिक्षेप शृंखला है ?
(Is instinct a chain-reflex)

हर्बर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) तथा दूसरे यन्त्रवादी मनोवैज्ञानिकों (Mechanistic School) का मत है कि मूल प्रवृत्ति केवल प्रतिक्षेप शृङ्खला मात्र है। यह मत अधिकांश मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है। अनेक तर्क यह सिद्ध करने के लिये दिये गये हैं कि मूल प्रवृत्ति प्रतिक्षेप शृङ्खला *(Chain Reflexes) नहीं है। उनमें से कुछ पर हम प्रकाश* डालेंगे।

फ्रायड (Freud) कहता है कि मूल प्रवृत्तियों का उद्गम स्थान आभ्यान्तरिक (Internal) है न कि प्रतिक्षेप (Reflex) के समान किसी बाह्य उद्दीपक (External Stimulus) से प्रारम्भ होता है। फिर प्रतिक्षेप से भिन्न मूल प्रवृत्तियों को उत्तेजन दीर्घकालीन तथा बहुत कुछ नित्य होता है। मूल प्रवृत्तियों के इन दो लक्षणों को भूख प्यास की मूल प्रवृत्तियों से स्पष्ट किया जा सकता है। भूख प्यास का आदि कारण आभ्यान्तरिक (Internal) होता है और यह प्रतिक्षेप से भिन्न होकर कुछ समय तक जारी रहता है।

फिर प्रत्येक मूल प्रवृत्ति में कारक बल (Impetus), विषय वस्तु (Object) तथा उद्देश्य (End) पाया जाता हैं। कारक बल से अर्थ होता है कि मूल प्रवृत्ति के क्रियाशील होने पर पिण्ड स्नायु में गति होती है जैसे शरीर में भूख लगने पर शरीर के अनेक स्नायुओं का सञ्चालन होता है ताकि भोजन प्राप्त हो सके अर्थात् पैर से चलना, हाथ से पकड़ना, लार का टपकना इत्यादि। इसी प्रकार मूल प्रवृत्ति का यह फ्रायड का विश्लेषण मैकडूगल के सिद्धान्त से बहुत मिलता है क्योंकि इनके अनुसार भी प्रत्येक मूल प्रवृत्ति में उद्वेग (Emotion) तथा कारक बल पाया जाता है।

ड्राउलस[1] भी कहता है कि प्रतिक्षेप क्रिया और मूल प्रवृत्ति में दो प्रमुख अन्तर हैं। प्रथम मूल प्रवृत्ति की पूर्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति की प्रेरणा से निश्चित होती है और प्रतिक्षेप क्रिया प्रतिगामी उत्तेजक द्वारा। हम चिड़ियों के

---

[1] ibid.

घोंसला बनाने के मूल प्रवृत्ति व्यवहार को ले सकते हैं। जब चिड़िया एक तिनका अपनी चोंच मे दवाती है तो वह प्रतिक्षेप क्रिया प्रदर्शित नहीं करती। वह कभी अपने शरीर के किसी अवयव को चलाती है तो कभी किसी को। उसकी गति किसी उत्तेजक द्वारा निश्चित नहीं होती, बल्कि घोंसला बनाने के उद्देश्य की प्रेरणा ही होती है जो कि इसकी जाति की प्रत्येक चिड़िया के लिये अनोखी होती है। जो व्यवहार उद्देश्य द्वारा निश्चित् होता है उसे उद्देश्यपूर्ण व्यवहार (Purposive behavior) कहा जाता है। हो सकता है कि जिस प्राणी ने प्रथम बार मूल प्रवृत्ति व्यवहार को किया होगा उसे अन्तिम उद्देश्य के विषय मे कोई ज्ञान न हो। प्रतिक्षेप-शृङ्खला-सिद्धान्त (Chain Reflex Theory) एक मूल प्रवृत्ति व्यवहार को भूतकालीन उत्तेजक (Past Stimli) के द्वारा मानता है न कि उद्देश्य की प्रेरणा से।

दूसरा आरोप थाउलस का यह है कि एक प्रकार की उत्तेजना से एक ही प्रकार के व्यवहार की आशा की जाती है परन्तु प्रत्यक्ष मानव व्यवहार मे ऐसा नहीं होता। मान लिया कि नालायक (Idiot) शब्द की ध्वनि से एक प्रतिक्षेप क्रिया प्रारम्भ होती है और इसके कारण दाहिना हाथ उठता है और कहने वाले के गाल पर थप्पड़ पड़ जाता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि नालायक शब्द को ले जाने वाली धमनी (Nerse) अन्य शब्दों को ले जाने वाली धमनियों (Nerves) से पृथक है, परन्तु वास्तविक व्यवहार में इस प्रकार नहीं होता है। इसी शब्द को सुनकर एक ही व्यक्ति विभिन्न प्रकार का व्यवहार विभिन्न समय एवं परिस्थितियों मे करता है।

मैक्डूगल (McDougall)[1] का मत है कि मूल प्रवृत्तियाँ मनः शारीरिक (Psycho-physical) क्रियाएं हैं, इनको केवल शारीरिक (Physical) नहीं समझना चाहिये। प्रतिक्षेप क्रिया केवल क्रियात्मक (Conative) होती है परन्तु मूल प्रवृत्तियाँ ज्ञानात्मक (Cognitive) और उत्तेजनात्मक (Affective) भी होती हैं। मूल प्रवृत्ति शारीरिक और मानसिक दोनों ही है। वे केवल शारीरिक नहीं हो सकती। यह ठीक है कि मूल प्रवृत्तियों का उद्गम स्थान शरीर के कुछ अंगों मे रहता है, परन्तु इसका आधार मानसिक भी है। अतः मूल प्रवृत्ति मन शारीरिक प्रक्रिया के समान, ज्ञानात्मक, उत्तेजनात्मक और क्रियात्मक पहलुओं पर भी विचार करना होगा।

जयदेव सिंह का भी मत है कि मूल प्रवृत्ति मे चेतन प्रक्रिया रहती है जो

[1] ibid.

कि इसे प्रतिक्षेप क्रिया से पृथक् करती है। उसने लिखा है, "एक मूल प्रवृत्ति को प्रतिक्षेप क्रिया कभी नहीं समझा जा सकता।"[1]

(व) मूल प्रवृत्ति और प्रतिक्षेप क्रिया मे अन्तर
(Distinction between Instinct and Reflex Action)

मूल प्रवृत्ति और प्रतिक्षेप क्रिया मे अनेक भेद हैं उनमे से प्रमुख निम्न हैं:–

प्रतिक्षेप क्रिया (Reflex Action)	मूल प्रवृत्ति (Instinct)
१. प्रतिक्षेप क्रिया एक विशिष्ट उत्तेजना की प्रतिक्रिया के रूप में होती है।	१. मूल प्रवृत्ति सम्पूर्ण परिस्थिति (Total Situation) की प्रतिक्रिया होती है। उसकी उत्तेजना केवल एक क्रिया तक सीमित नहीं रहती बल्कि उद्देश्य की पूर्ति तक रहती है।
२ यह केवल स्थानीय प्रतिक्रिया (Localized response) होती है। जैसे कोई अगुली हमारी आँख की ओर लाता है तो आँख अपने आप बन्द हो जाती है। इसका पूरे शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं।	२. यह सम्पूर्ण प्राणी की प्रक्रिया है अर्थात् इसमे शरीर का एक या एक से अधिक, कोई भी अवयव भाग लेता है जैसे चिडियो की घोंसला बनाने की मूल प्रवृत्ति. इस मूल प्रवृत्ति के कारण चिडिया उडती है, तिनके उठाती है, पेड पर जमा करती है और गा गाकर अपने घोंसले का निर्माण करती है।
३. उत्तेजना के प्रतिरूप केवल एक ही साधारण प्रतिक्रिया होती है और वह भी उचित सरल ढङ्ग की।	३. इसमे अनेक क्रियाएं असाधारण एव जटिल प्रकार की होती हैं।
४. यह अपरिवर्तनीय (Stereotyped) क्रिया होती रहती है।	४. इसमे उद्देश्य के अनुसार प्रतिक्रिया के विभिन्न भागों मे अनेक परिवर्तन होते रहते हैं।

[1] "An Instinct can, therefore, be never mistaken for reflex activity." Jaidev Singh; 'A Manual of Social Psychology', p. 13, The City Book House, Kanpur, 1951.

५ यह केवल शारीरिक प्रतिक्रिया है।	५. यह केवल दैहिक (Physiological) प्रतिक्रिया नहीं है बल्कि यह इच्छा (Will), प्रेरणा (Impulse), भावना (Spirit), चित्तवृत्ति (Mood) इत्यादि द्वारा निश्चित होती है।
६. यह प्रतिक्रिया होकर समाप्त हो जाती है यदि दूसरी उत्तेजना प्राप्त न हो।	६ यह उस समय तक समाप्त नहीं होती जब तक कि इच्छा या उद्देश्य पूरा नहीं होता।
७. यह प्रकृति मे परिवर्तक (Impulsive) नहीं होती।	७. यह प्रकृति मे परिवर्तक (Impulsive) होती है।
८. इसमे कोई भी चेतन अवस्था (Conscious) नहीं होती अर्थात् इसमे केवल क्रियात्मक क्रिया (Conative process) ही होती है और मानसिक प्रक्रियायें नहीं होतीं।	८ इसमे चेतन अवस्था पाई जाती है और ज्ञानात्मक (Conative) और उत्तेजनात्मक (Affective) दोनों ही मानसिक प्रक्रियायें पाई जाती हैं। मूल प्रवृत्ति और प्रतिक्षेप क्रिया मे सबसे बड़ा अन्तर यही है कि प्रतिक्षेप क्रिया मे मानसिक प्रक्रिया नहीं पाई जाती है।

मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त की कुछ प्रमुख विशेषतायें — (Some important characteristics of McDougall's theory of Instinct)

मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त को इतना विस्तार दिया गया कि सन् १९०८ और उसके कुछ समय बाद तक अनेक मनोवैज्ञानिक इस सिद्धान्त को मानने लगे और ऐसा समझा जाने लगा कि मानव व्यवहार को इस सिद्धान्त के आधार पर सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। अब हम उस सिद्धान्त की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर, जिन पर मैकडूगल ने जोर दिया है, विचार करेंगे:—

१. प्रत्येक मूल प्रवृत्यात्मक क्रिया के तीन मानसिक पहलू होते हैं— (अ) ज्ञानात्मक (Cognitive), (ब) उत्तेजनात्मक (Affective), (स) क्रियात्मक (Conative)।

२. मस्तिष्क के तीन भाग होते हैं —(अ) केन्द्र पर पहुचाने वाला भाग (Afferent), (ब) केन्द्रीय भाग (Central), (स) बाहर की ओर ले जाने वाला भाग (Efferent)।

प्रथम भाग, बोध हुई वस्तु को, प्राप्त करता है और उसे केन्द्र तक पहुचाता है। केन्द्र या द्वितीय भाग उसे निर्देशित करता है और तृतीय भाग उसे बाहर की ओर ले जाकर कार्य करने के लिये प्रवृत्त करता है।

३ केन्द्रीय भाग सदैव अपरिवर्तित रहता है।

४. प्रत्येक मूल प्रवृति एक उद्वेग द्वारा अनुगामित होती है।
(Instinct is accompanied by an Emotion)

(क) मंकडूगल का कहना है कि प्रत्येक मूल प्रवृत्ति एक विशिष्ट प्रकार के सहवर्ती उद्वेग (Accompanying Emotion) द्वारा अनुगामित होती है। (ख) जब कि एक प्रमुख मूल प्रवृत्ति उत्तेजित होती है तो वह एक विशिष्ट प्रकार की उत्तेजना द्वारा अनुगामित होती है। इस विशिष्ट प्रकार की उत्तेजना को मौलिक उद्वेग कहते हैं। (ग) उसने कुछ मूल प्रवृत्तियो और उनके सहवर्ती उद्वगों की सूची भी दी है —

मूल प्रवृत्ति (Instinct)		सहवर्ती उद्वेग (Accompanying Emotion)	
(Instincts of well defined Emotional Tendency)			
पलायन	(Flight)	भय	(Fear)
निवृत्ति	(Repulsion)	घृणा	(Disgust)
जिज्ञासा	(Curiosity)	आश्चर्य	(Wonder)
युयुत्सा	(Pugnacity)	क्रोध	(Anger)
पुत्र कामना	(Parental)	कोमल	(Tender)
(Instincts of less well defined Emotional Tendency)			
भोग	(Sex)	काम	(Lust)
सामूहिक जीवन	(Gregarious)	एकाकीपन	(Loneliness)
सचय	(Acquisition)	स्वत्व	(Ownership)
विधायकता	(Constructive)	कृति भाव	(Creativeness)

५ मूल प्रवृत्तियो का मानव व्यवहार मे एक महत्वपूर्ण स्थान है

मंकडूगल ने मानव व्यवहार मे मूल प्रवृत्तियों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उसका कहना है कि प्राणी व्यवहार के पीछे चालक-शक्ति मूल

प्रवृत्तियों की होती हैं। उसने इन बलशाली शब्दों में लिखा है, "हम कह सकते हैं कि मूल प्रवृत्तियां प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण मानव व्यवहार की प्रमुख चालक होती हैं।"[1]

उसने अपने विचार की पुष्टि करते हुए आगे लिखा है, 'ये प्रेरणाएँ मानसिक शक्तियां हैं जो कि व्यक्तियों और समाजों के सम्पूर्ण जीवन का निर्माण करती हैं और उसे बनाये रखती हैं। उनमें ही हम जीवन, मस्तिष्क और इच्छा की प्रमुख रहस्य की समस्या को पाते हैं।"[2]

मैकडूगल इतने से सन्तुष्ट नहीं हुआ है। मूल प्रवृत्तियों को उसने प्राणी व्यवहार का आधार ही मान लिया। उसका कहना है कि यदि मूल प्रवृत्तियाँ न हो तो प्राणी मृतक के समान हो जायेगा। उसके शब्दों को ही लिखना उचित होगा। वह लिखता है, "इन मूल प्रवृत्यात्मक स्वभाव को उनकी शक्तिशाली प्रेरणाओं एवं परिवर्तकों के साथ हटा लीजिये तो प्राणी किसी भी प्रकार के कार्य के योग्य न रह जायगा। वह इस प्रकार से शक्तिहीन निश्चल एवं गतिहीन हो जायगा जैसे एक अद्भुत घड़ी जिसकी प्रमुख कमानी (Spring) निकाल ली गई हो या भाप का इंजिन जिसकी अग्नि हटा दी गई हो।" [3]

मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त की आलोचना

(Criticism of McDougall's theory of Instinct)

यद्यपि मैकडूगल ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन इतने सुन्दर ढंग से किया है कि कोई भी तर्कवादी व्यक्ति उन्हें स्वीकार कर लेगा। उसके सिद्धान्त द्वारा प्राणी व्यवहार को समझने में अमूल्य सहायता प्राप्त हुई है। इस पर भी

---

[1] "We may say, then, that directly or indirectly the instincts are the prime movers of all human activity. McDougall, W 'An Introduction to Social Psychology,' p 38

[2] "These impulses are the mental forces that maintain and shape all the life of individuals and societies, and in them we are confronted with the central mystery of life and mind and will." McDougall, p. 38. ibid.

[3] "Take away these instinctive dispositions with their powerfull impulses, and the organism would become incapable of activity of any kind, it would be inert and motionless like a wonderful clock-work whose mainsprings had been removed or a steam engine whose fires had been drawn." McDougall, p. 38.

उसका सिद्धान्त आलोचना के प्रहारों से नहीं बच सका है। उसके सिद्धान्त के विरुद्ध महत्वपूर्ण आलोचनाएं निम्न हैं:—

(१) मस्तिष्क के त्रिविभाजन की आलोचना

(Criticism against the tripartite division of mind)

(अ) जि.सवर्ग ने मस्तिष्क के विभाजन की युक्ति की आलोचना की है। उसका कहना है कि मस्तिष्क का तीन भागों में विभाजन सत्यता की दृष्टि से बहुत दूर है। तीनों ही एक दूसरे से अत्यधिक सम्बन्धित हैं और विशेषतया उत्तेजना और क्रिया तो एक दूसरे से पृथक् किये ही नहीं जा सकते।

(आ) मैकडूगल ने एक मूल प्रवृत्ति को जोड़ने को समुच्चय बोधक (Conjunction) माना है। डा० स्टाउट (Dr Stout) ने इसका विरोध किया है। उनका मत है कि पशुओं में एक विशिष्ट ज्ञानात्मक प्रवृत्ति होती है। मैकडूगल ने यह सिद्ध नहीं किया है कि ज्ञानात्मक स्वभाव एक पृथक ढांचा है। मैकडूगल का दैहिक सिद्धान्त (Physiological theory), जिसके आधार पर उसके मस्तिष्क के तीन भाग माने हैं, कल्पना पर आधारित है।

(२) "प्रत्येक मूल प्रवृत्ति एक उद्वेग द्वारा अनुगामित होती है।" के सिद्धान्त की आलोचना

(1) शैन्ड द्वारा आलोचना [1]

(अ) एक मूल प्रवृत्ति बिना किसी उद्वेग के उत्तेजित हुए हो सकती है। जैसे एक चिड़िया नीड का निर्माण करती है या शिकार करती है। ऐसे समय मे यह आवश्यक नहीं है कि एक विशिष्ट प्रकार का ही निश्चित् उद्वेग उत्पन्न हो जैसा कि मैकडूगल का मत है।

(ब) एक मौलिक उद्वेग (Primary emotion) कई मूल प्रवृत्तियों से या क्रियात्मक स्वभावों से सम्बन्धित हो सकता है, परन्तु मैकडूगल का मत है कि प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का एक विशिष्ट एवं पूर्व निश्चित् मौलिक उद्वेग ही उठता है। उदाहरणस्वरूप जब भय (Fear) का उद्वेग उत्पन्न होता है, [पलायन (Flight) मूल प्रवृत्ति का सहवर्ती उद्वेग (Accompanying Emotion) भय (Fear) है।] तो इसके कारण विभिन्न प्रकार का व्यवहार हो सकता है न कि केवल पलायन। हम भाग सकते हैं, छिप सकते

[1] Shand, Foundations of Character.

हैं, चुप रह सकते हैं, मूर्तिवत् खडे रह सकते हैं, तीव्र स्वर मे चिल्ला सकते हैं और पलायन भी कर सकते हैं।

(स) एक मूल प्रवृत्ति कई उद्वेगों को उत्तेजित कर सकती है जब कि मैकडूगल का कहना है कि एक मूल प्रवृत्ति एक विशिष्ट एव पूर्व निश्चित उद्वेग को ही उकसा सकती है। उदाहरणतया चिडियों के उडने की मूल प्रवृत्ति न केवल भय के उद्वेग से सम्बन्धित है बल्कि क्रोध, प्रसन्नता या शारीरिक सुख के लिये भी चिडियाँ उडती हैं।

(ii) जिन्सबर्ग द्वारा आलोचना [1]

जिन्सबर्ग का मत है कि उद्वेग उस समय उत्तेजित होता है जब कि किसी प्रेरणा का अवरोध किया जाता है या देर की जाती है या अत्यधिक उत्तजना हो जाती है जिसे काय सन्तुष्ट नहीं कर पाता। जब किसी मूल प्रवृत्ति का क्रियात्मक पहलू सन्तुष्ट हो जाता है तो उद्वेग अति न्यून स्तर पर होता है। मान लीजिये हम भाग रहे हैं और कोई भयानक पशु हमारा पीछा कर रहा है। जब तक हम भाग रहे हैं हमारे अन्दर कोई भय उत्पन्न नहीं होता। बीच मे एक दीवार आ जाती है और हम भागना बन्द कर देते हैं उस समय हमारे अन्दर अत्यधिक भय उत्पन्न होता है। अत उद्वेग मूल प्रवृत्ति व्यवहार के सन्तुष्ट होने पर नही वरन् जब उसमे बाधा उपस्थित होती है तब उत्पन्न होता है।

ड्रेवर (Drever) और रीवर्स (Rivers) का भी यही मत है।

(iii) डा० विलियम ब्राउन द्वारा आलोचना

डा० विलियम ब्राउन (Dr William Brown) ने भी जिन्सबर्ग का समर्थन करते हुए यह कहा है कि मैक्डूगल ने स्वय ही लिखा है कि एकाकीपन के उद्वेग (Emotion of loneliness) की सहवर्ती मूल प्रवृत्ति सामाजिक (Social Instinct) है। उसने यह स्वीकार भी किया है कि जब तक मनुष्य की दूसरों के साथ रहने की मूल प्रवृत्ति की सन्तुष्टि होती रहती है अर्थात् जब तक वह दूसरे मनुष्यों के साथ रहता है तब तक उसे कोई उद्वेग अनुभव नहीं होता परन्तु जब इसमे बाधा उपस्थित होती है अर्थात् उसे दूसरे मनुष्यो से पृथक् करके अकेले मे रहने को परिस्थितियाँ बाध्य करती हैं तब अकेलेपन का उद्वेग उत्तेजित होता है।

[1] Ginsberg, M 'The Psychology of Society', p 9, Methuen & Co. Ltd, Eighth Edition, 1951

इसका अनुभव हम अपने दैनिक जीवन मे करते हैं। यदि मनुष्य को अकेले रखा जाय तो वह अकेलेपन का उद्वेग अनुभव करेगा और चूंकि समाज मे रहना उसकी मूल प्रवृत्ति है अत वह उसकी पूर्ति न होने पर उस उत्तेजना के कारण दु खी होगा। इसी प्रकार जब हमे काम का उद्वेग (Sexual Emotion) उत्तेजित करता है और यदि हम मैथुन कर लेते हैं तो यह उद्वेग समाप्त हो जाता है और यदि उसमे बाधा उपस्थित होती है तो यह उद्वेग उत्तेजित होता जाता है यहां तक कि मनुष्य की बुद्धि भी भ्रष्ट कर देता है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं। जिनसे सिद्ध होता है कि उद्वेग उस समय उत्पन्न होता है जब कि मूल प्रवृत्ति के व्यवहार मे बाधा उपस्थित होती है।

(iv) जयदेव सिंह द्वारा आलोचना [1]

जयदेव सिंह (Jaidev Singh) का मत है कि कुछ मूल प्रवृत्तियो के उद्वेगों को सरलता से पहिचाना नहीं जा सकता।

(v) थाउलस द्वारा आलोचना

थाउलस का मत है कि उद्वेग प्राणी को अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये विभिन्न प्रकार का व्यवहार करने का अवसर प्रदान करता है। उसने लिखा है, "उद्वेग वह प्रेरणा शक्ति है जो कि ज्ञानयुक्त अस्थिर व्यवहार की उसी प्रकार सेवा करती है जिस प्रकार स्वाभाविक मूल प्रवृत्तीय व्यवहार अपरिवर्तनशील प्रतिक्रियाओं की आवश्यकताओ की सेवा करता है।"[2]

(३) मूल प्रवृत्ति को मानव व्यवहार का आधार मानने वाले सिद्धान्त की आलोचना

(1) लॉयड मॉर्गन (Llyod Morgan) ने मैकडूगल के इस सिद्धान्त की आलोचना की है कि मूल प्रवृत्तिया मौलिक तत्व हैं और सारा मानव

[1] Jaidev Singh, 'A manual of Social Psychology', p 21, The City Book House, Kanpur, Second Edition, 1951

[2] Emotions are driving forces serving intelligent variable behaviour just as the automatic instinctive responses serve the needs of stereotyped behaviour." Thouless, R H, p 94, 'General and Social Psychology', Second Edition, Reprinted, 1944

व्यवहार इसी पर आधारित हैं। उसका कहना है कि यह विभिन्न व्यवहारों के स्वरूपों के वर्ग का नाम है न कि मौलिक तत्व है।

(ii) वुडवर्थ (Dr. Woodworth) का कहना है कि हम जीवन की प्रत्येक रुचि के लिये विभिन्न मूल प्रवृत्तियों तक ही सीमित नहीं हैं। वास्तव में प्रत्येक मानव के गुण एवं शक्ति का आन्तरिक पहलू होता है। उसने लिखा है, "संगीत की योग्यता के साथ साथ संगीत में रुचि, संख्या के सम्बन्धों (गणित) को रखने के साथ साथ संख्या में रुचि, यन्त्र कलाओं की योग्यता के साथ साथ यन्त्रों से रुचि होती है और इसी प्रकार से यह रुचि सारी योग्यताओं में, जो कि सब लोगों में सामान्य रूप से या कुछ विशेष लोगों में प्रबल रूप से पाई जाती है, होती है।" [1]

वुडवर्थ ने मैकडूगल के सिद्धान्त की ओर भी आलोचना की है। हो सकता है कि मैकडूगल पशु जगत के व्यवहार का आधार मूल प्रवृत्तियों को समझे, परन्तु मानव व्यवहार में अनेकानेक नवीन लक्ष्य उत्पन्न होते रहते हैं और उन सबको मूल प्रवृत्तियों के आधार पर नहीं समझाया जा सकता। अतः मैकडूगल का यह कहना, कि मानव व्यवहार की प्रमुख चालक मूल प्रवृत्तियाँ हैं, स्वीकार नहीं किया जा सकता। मानव जीवन कहीं अधिक विस्तृत है। हमारे लिये संसार केवल इसीलिये रुचिकर नहीं कि वह हमें भोजन, घर और प्रमुख मूल प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि प्रदान करता है बल्कि इसीलिए भी कि हम में यह शक्ति पाई जाती है कि हम प्रकृति को अपनी रुचि के अनुसार, अपनी इच्छाओं के अनुरूप बना लेते हैं।

(iii) जिन्सबर्ग द्वारा आलोचना

जिन्सबर्ग का मत है कि मैकडूगल का यह विचार अनुचित है कि प्राणी केवल मूल प्रवृत्तियों का जोड़ मात्र है। वह कहता है कि यह निर्विवाद सत्य है कि मानव चरित्र वंशानुसंक्रमण (Heredity) पर आधारित है और इसका आधार मूल प्रवृत्तियों और उद्वेगों में पाया जाता है तथापि वंशानुसंक्रमण की

---

[1] "Along with the capacity for music goes the musical interest, along with the capacity for handling numerical relations goes an interest in numbers, along with the capacity for mechanical devices goes the *interest in mechanics*; *and so* through the list of capacities with those that are generally present in all men, and those that are strong only in exceptional individual" Dr. Woodworth, 'Dynamic Psychology', p. 78.

प्रवृत्तियां एकाकीपन मे ही नहीं पनप सकती। अत उसको ही आधार मानना सरासर भूल है।

मूल प्रवृत्तियां सदैव परिवर्तित होती रहती हैं। इसको हम युद्ध के उदाहरण से समझ सकते हैं। युद्ध केवल मूल प्रवृत्ति के कारण नहीं होता बल्कि युद्ध शक्ति को अपने हाथ मे रखने के लिये होता है। इसके द्वारा हम केवल मारने या नाश करने की मूल प्रवृत्ति को ही पूरा नहीं करते बल्कि बहुत ही जटिल समस्याएं एक युद्ध मे सम्मिलित रहती हैं और इसके कारणो का विश्लेषण केवल मूल प्रवृत्तियां नहीं कर सकती, बल्कि अनेक कारण, जिनका नाश करने की मूल प्रवृत्ति से कोई भी सम्बन्ध नहीं होता, युद्ध को जन्म देते हैं।

(१४) हॉब हाउस द्वारा आलोचना

मानव व्यवहार को निश्चित् एव निर्देशित करने वाली केवल मूल प्रवृत्तियां ही नहीं होती बल्कि सामाजिक परम्परा भी एक प्रमुख प्रभाव डालती है। हमारा कोई भी व्यवहार केवल शुद्ध मूल प्रवृत्तियो के कारण नहीं होता, क्योकि मानव व्यवहार निश्चित् एव विशिष्ट प्रकार का नहीं होता। उसमें अनेक परिवर्तन होते रहते हैं। उसने इसका उदाहरण भूख और प्यास से दिया है। वह लिखता है, 'भूख और प्यास नि'सन्देह मूल प्रवृत्तियों की प्रकृति की है परन्तु भूख और प्यास को सन्तुष्ट करने की पद्धतियां अनुभव एव शिक्षा द्वारा अपनाई जाती हैं।" [1]

मूल प्रवृत्तियां जन्मजात होती हैं और वशानुसक्रमण मे पाई जाती हैं। हॉब हाउस का कहना है कि बिना सामाजिक पर्यावरण के ये तत्व विकसित नहीं हो पाते, अत इनको ही मानव व्यवहार का आधार मानना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। वह लिखता है, "वशानुसक्रमण मनुष्य मे क्षमता, सुप्रवृत्ति, प्रकृति है, परन्तु पारस्परिक सघर्ष एव पर्यावरण के कारण क्षमतायें पूर्ण होती हैं। सुप्रवृति उत्साहित या हतोत्साहित होती है, प्रकृति का विकास या विनाश होता है।"[2]

---

[1] 'Hunger and Thirst, no doubt, are of the nature of instincts, but the methods of satisfying hunger and thirst are acquired by experience or by teaching," Hobhouse, L. T. 'Morals in Evolution', p 11.

[2] "What is hereditary in man is capacity, propensity, disposition, but the capacities are filled in, the propencities

इस प्रकार हम देखते हैं कि मैकडूगल के मूल प्रवृत्तीय सिद्धान्त में अनेक दोष पाये गये हैं, परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं होना कि इस सिद्धान्त में कोई तथ्य नहीं है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि मूल प्रवृति शब्द का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने इसके लिये प्रेरणायें (Drives) या प्रेरक शक्तियां (Motives) आदि शब्दों का प्रयोग करने का सुझाव दिया है।

मूल प्रवृत्ति और बुद्धि का सम्बन्ध
(Relation between Instinct and Intelligence)

कुछ विद्वानों का मत है कि मूल प्रवृति और बुद्धि दो विपरीत शब्द हैं, परन्तु यह सत्य नहीं है। डा० मैक्डगल का कहना है, "यह मानकर कि सम्पूर्ण पशु व्यवहार मूल प्रवृत्ति और बुद्धि दोनों ही के कारण होता है, हमें उस प्राचीन भूल का परित्याग अवश्य कर देना चाहिए।"[२]

प्रो० स्टाउट (Prof Stout) का भी कहना है कि मूल प्रवृत्ति और बुद्धि प्रारम्भ से ही सहयोग करती है। वह लिखता है, मूल प्रवृतीय व्यवहार, प्रारम्भ से ही जो कुछ भी मानसिक क्रिया के योग्य पशु होता है, काम में लाता है।"[३]

कुछ लोगों का आरोप है कि पहले मूल प्रवृत्तीय व्यवहार में बुद्धि किस प्रकार से काम में आ सकती है जब कि पशु आश्चर्यजनक व्यवहार प्रथम बार ही करता है और उसे सीखने, अवलोकन करने या अनुभव करने का कोई अवसर प्राप्त नहीं होता। जिसबर्ग का कहना है कि मूल प्रवृत्ति अनुभव से स्वतन्त्र एवं जन्म से ही पूर्ण होती है।

---

encouraged or checked, the dispositions inhibited or developed by mutual interactions and the pervading influence of the circumambient atmosphere." Hobhouse, L. T 'Mind in Evolution', p. 105

[२] "We must avoid this ancient error from the outset by recognizing that all animal behaviour is both instinctive and intelligent, ...," McDougall, W 'The Energies of Men', p 32.

[३] "Instinctive movements from the outset bring into play whatever mental activity the animal may be capable of." Stout, G. F., 'A Manual of Psychology', p 336.

कुछ विद्वानों का यह मत है कि बुद्धि मूल प्रवृत्तियों के क्षेत्र मे विकास पाती है और जैसे जैसे विकास होता जाता है वैसे २ बुद्धि प्रबल शक्ति बन जाती है और अपरिवर्तनशील मूल प्रवृत्तीय व्यवहारों को लोचदार बनाती है।

मानव व्यवहार मे मूल प्रवृत्ति और बुद्धि दोनों का सन्तुलन सदैव चलता रहता है। यदि हम अपने दैनिक जीवन के व्यवहारो का अवलोकन करें तो ज्ञात होगा कि कई बार हमारे अन्दर विचित्र प्रकार की उत्तेजनाएं (जो कि मूल प्रवृत्तियो के कारण होती हैं) उत्पन्न होती हैं, परन्तु हम अपनी बुद्धि द्वारा उन्हें सन्तुलित करते हुए, उन व्यवहारो मे, परिवर्तित कर देते हैं जो कि समाज द्वारा मान्य होते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इस मध्यवर्गीय मार्ग का अनुसरण करते हैं। उनका कहना है कि मूल प्रवृत्ति और बुद्धि दोनो एक दूसरे से अत्यधिक सम्बन्धित हैं।

मेरे विचार से यह विवाद बुद्धि (Inteligence) शब्द के विभिन्न अर्थों के कारण हैं न कि तथ्यो के आधार पर। दोनो ही पूर्णतया स्पष्ट हैं। यदि हमारा बुद्धि से तात्पर्य मानसिक क्षमता या अवस्था से है तो वह प्रत्येक पशु एव उसके मूल प्रवृत्तीय व्यवहार मे पाई जाती है। यदि हमारा बुद्धि से तात्पर्य उन अपनाई हुई प्रवृत्तियो से है जो कि प्रत्यक्ष या परोक्ष शिक्षा द्वारा प्राप्त की जाती है तो बुद्धि प्रथम मूल प्रवृत्तीय व्यवहार मे नहीं पाई जाती है। यद्यपि यह सिद्ध करना उच्च श्रेणी के पशुओ के व्यवहार के उदाहरण से कठिन है और विशेषतया मनुष्य के जटिल व्यवहारों के कारण तो कोई सम्भव नहीं है, तथापि हम यह प्रश्न दोहरा सकते हैं कि तितली के कीडे (Cerambyx) का मूल प्रवृत्तीय व्यवहार किस प्रकार से समझाया जा सकता है। यदि बुद्धि शब्द का अर्थ एक ही लिया जाय तो विवाद समाप्त हो सकता है।

बुद्धि की अनेक परिभाषायें करने का प्रयत्न किया गया है। थाउलस लिखता है, 'मूल प्रवृत्तीय प्रतिक्रिया का अनुकूलन ही बुद्धि है।"[1]

निस्सन्देह मूल प्रवृत्ति और बुद्धि एक दूसरे से अत्यधिक सम्बन्धित हैं। इस पर भी दोनों मे कुछ स्पष्ट अन्तर पाये जाते हैं जिनके आधार पर हम एक दूसरे को यद्यपि एकदम पृथक् नहीं कर सकते तथापि पहिचान सकते हैं। वे अन्तर निम्न प्रकार से व्यक्त किये जा सकते हैं।

---

[1] "Adaptability of instinctive response is intelligence" Thouless, R H, 'General and Social Psychology,' p. 49, Second Edition, Reprinted 1944.

मूल प्रवृत्ति (Instinct)	बुद्धि (Intelligence)
(१) मूल प्रवृत्ति जन्म से ही पूर्ण होती है।	(१) बुद्धि जन्म से पूर्ण नहीं होती। यह अवस्था के साथ साथ बढ़ती जाती है और पूर्णता तक कभी नहीं पहुचती।
(२) यह अनुभव रहित होती है।	(२) यह अनुभव एव अवलोकन द्वारा सीखी जाती है।
(३) इसमें भावी ज्ञान नहीं होता यद्यपि उपदेश पाया जाता है।	(३) इसमें भावी ज्ञान उद्देश्य के लिये होता है।
(४) मूल प्रवृत्ति व्यवहार मे क्रमश विभिन्न अवस्थाओं मे निश्चित् रीति के अनुसार व्यवहार होता है और परिवर्तन अति न्यून सीमा मे होता है।	(४) इसमें विभिन्न अवस्थाओं मे विभिन्न प्रकार का व्यवहार हो सकता है। वह कभी पूर्व निश्चित् नहीं रहता बल्कि परिस्थिति के अनुसार लक्ष्य को दृष्टि मे रखकर परिवर्तित होता रहता है।
(५) मूल प्रवृत्ति व्यवहार को सामान्य प्रयानुसार साधारण घटना-क्रम मे यदि कोई बाधा उपस्थित हो जाय तो सम्पूर्ण क्रिया समाप्त हो जाती है।	(५) इसमे ऐसा नहीं होता। यदि उद्देश्य की प्राप्ति मे एक उपाय असफल होता है तो दूसरे उपाय अपना लिये जाते हैं।
(६) मूल प्रवृति व्यवहार की पद्धतियाँ अपरिवर्तनशील एव यन्त्र-वत् होती हैं।	(६) इसकी पद्धतियाँ अधिक अनुकूलन करने योग्य एव परिवर्तन-शील होती हैं।

प्रश्न

१ मूल प्रवृति की परिभाषा कीजिये और इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
(Define Instinct and describe its characteristics)

२ मूल प्रवृति और प्रतिक्षेप क्रिया मे अन्तर बतलाइये। क्या यह कहना उचित है कि मूल प्रवृत्ति प्रतिक्षेप क्रिया शृङ्खला है ?

(Distinguish Instinct from Reflex Action ? Is it correct to say that instinct is Chain Reflex Action ?

३. मूल प्रवृत्ति और बुद्धि मे क्या सम्बन्ध है ?
(What is the relation between instinct and intelligence ?)

४. मैकडूगल का मूल प्रवृत्ति का सिद्धान्त लिखिये। आप कहां तक उसके विचार से सहमत हैं ?
(Write McDougall's theory of instincts How far you agree with him ?)

५. चार मूल प्रवृत्तियों के नाम बताइये और उनके सहवर्ती उद्वेग भी बताइये। कारण देते हुए लिखिये कि आप उनमे से किसको सबसे अधिक शक्तिशाली समझते हैं।
(Name four instincts and their corresponding emotions. Mention which you consider the most powerful, giving reasons.) Agra, 1952.

६. क्या मैकडूगल का मूल प्रवृत्ति सिद्धान्त मानने योग्य है ? यह किस प्रकार से उद्वेग और बुद्धि से सम्बन्धित है ?
(Is McDougall's concept of 'Instinct' tenable ? How is it related with emotions and intelligence ?) Agra, 1956.

SELECTED READINGS

1. McDougall, 'Social Psychology' Chapters II, III, IV.
2. Thouless, 'General and Social Psychology' Chapter III and IV.
3. Ginsberg, 'The Psychology of Society' Chapters I and II.

अध्याय ४

सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति

(Suggestion Imitation and Sympathy)

सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति को मैकडूगल ने अविशिष्ट (Nonspecific) मूल प्रवृत्तियां कहा है और इनको मनुष्य के व्यवहार मे अत्यधिक महत्वपूर्ण माना है । अब हम इन तीनो पर क्रमश: विचार करेंगे । उनका अर्थ समझने के उपरान्त अग्रिम अध्यायों मे उनका सामाजिक जीवन मे क्या कार्य एवं महत्व है, इस पर विचार करेंगे ।

सुझाव (Suggestion)

सुझाव का अर्थ

सुझाव शब्द से हम साधारण भाषा मे किसी ऐसे विचार या भाव को समझते हैं जो किसी दूसरे के द्वारा दिया जाता है, परन्तु सामाजिक मनोविज्ञान मे इस शब्द का अर्थ इससे कहीं अधिक विस्तृत एवं जटिल है। इसका अर्थ समझने के लिये कुछ प्रमुख मनोवैज्ञानिकों की परिभाषाओ पर विचार करेंगे ।

मैकडूगल लिखता है, "सुझाव एक सन्देशवाहन की प्रक्रिया है जो कि अतार्किक आधार पर होते हुए भी विश्वास के साथ स्वीकार कर ली जाती है ।" [१]

किमबाल यंग (Kimbal Young) लिखता है, 'सुझाव एक प्रकार का सन्देशवाहन का लक्षण है जो कि शब्दो, चित्रों या किसी दूसरे माध्यम द्वारा अस्पष्ट एवं अतार्किक आधार पर होते हुए भी उस बात को स्वीकार करने के लिये उद्यत करता है ।" [२]

---

[१] 'Suggestion is a process of communication resulting in the acceptance with conviction of the communicated proposition in the absence of logically adequate grounds for its acceptance " McDougall, W. 'An Introduction to Social Psychologoy.'

[२] "Suggestion is a form of symbol communication by words, pictures or some similar medium inducing acceptance of the symbol without any self-evident or logical ground for its acceptance." Yong, K. 'Handbook of Social Psychology', p. 110, Routledge and Kegan Paul, London, Fifth impression 1953.

थाउलस लिखता है, "सुझाव शब्द के द्वारा साधारणतया वह प्रक्रिया समझी जाती है जिसके द्वारा एक प्रकार के विचार एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को प्रकट एवं प्रदान किये जाते हैं और इस प्रक्रिया का विवेकशील अनुनय (Persuasion) से कोई सम्बन्ध नहीं होता।"[१]

सुझाव एक प्रकार की प्रक्रिया है जिसके कारण बिना सोचे समझे अतार्किक विचारों को भी स्वीकार कर लिया जाता है।

सुझाव की प्रक्रिया (Process of Suggestion)

इन परिभाषाओं से ज्ञात हुआ कि सुझाव एक प्रकार की मानसिक प्रक्रिया है जो कि विचार के प्रासकर्त्ताओं को अतार्किक, अवैज्ञानिक या सर्वसाधारण रीति से अस्वीकृत होते हुए भी स्वीकार करने को उद्यत करती है। अब हमें यह देखना है कि ऐसा क्यों होता है।

सुझाव की प्रक्रिया मस्तिष्क में आये हुए विचारों के लिये एक ऐसी भूमिका की रचना करती है जो कि तार्किक विश्लेषण की शक्ति को कम एवं समालोचक सयम को समाप्त कर देती है और सुझावकर्त्ता के लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है अर्थात् सुझाव स्वीकार कर लिया जाता है। इससे स्पष्ट है कि सुझाव की प्रक्रिया मस्तिष्क की स्थिति पर निर्भर होती है। यदि यह स्थिति सुझाव के अनुकूल होती है तो सुझाव तुरन्त स्वीकार कर लिया जाता है। अत हमें उन परिस्थितियों एवं दशाओं पर विचार करना चाहिये जिनमें सुझाव तुरन्त स्वीकार कर लिया जाता है।

प्रभावपूर्ण सुझाव के लिये आवश्यक परिस्थितियाँ

(1) बारबार दोहराना (Repetition)

बार बार जब किसी विचार की पुनरावृत्ति होती है तो वह शीघ्र स्वीकार कर लिया जाता है। हिटलर ने कहा है "एक झूठ को बार बार दोहराया जाय तो वह सत्य प्रतीत होता है।"[२]

---

[१] "The word 'suggestion' is now commonly used for the process by which an attitude towords a system of ideas is communicated from one person to another, by a process other than, that of rational persuasion" Thouless R H. 'General and Social Psychology,' p 247, University Tutorial Press London, Third Edition 1951

[२] "If is a lie is repeated very often, it appears to be true" Hitler, quoted by Young, K 'Handbook of Social Psychology.'

इस प्रक्रिया को सबसे अधिक आश्चर्यचकित अवस्था में हम वशीकरण विद्या (Hypnotism) मे पाते हैं। जादूगर अपने तमाशा देखने वालों को वशीभूत कर लेता है और फिर वह जो कुछ भी सुझाव देता है उनको लोग स्वीकार करते चले आते हैं।

(iv) मस्तिष्क की व्यवस्था की प्रतिकूल अवस्थाएँ
(**Abnormal states of the Brain**)

सुझाव मस्तिष्क की व्यवस्था की प्रतिकूल अवस्थाओं मे अत्यधिक प्रबल रूप से कार्य करता है। इसके अन्तर्गत हम निम्न बातो को ले सकते हैं—

(अ) मानसिक बीमारियाँ जैसे वात रोग या वातोन्माद (Hysteria) चित्त विकृतियाँ (Neurosis), मनो विकृतियाँ (Psychosis) इत्यादि।

(ब) थकान (*Fatigue*)—जब लोग थके हुए हों तो उनसे किसी प्रकार की भी बातें स्वीकार करवायी जा सकती हैं।

(स) मदिरा एवं अन्य मादक वस्तुओं के प्रभाव मे।

(द) लघु अवस्था मे।

(य) भावावेश मे।

(v) ज्ञान की कमी (**Lack of knowledge**)

जिन लोगो मे ज्ञान की कमी पाई जाती है वे सुझाव शीघ्रता से स्वीकार कर लेते हैं।

(vi) बाह्य परिस्थितियाँ (**External Conditions**)

सुझाव को स्वीकार करवाने में बाह्य परिस्थितियाँ भी बडी सहायता करती हैं जैसे अत्यधिक रोशनी, सजावट, धूमधाम, गाने बजाने और विशिष्ट प्रकार की व्यवस्थाएं इत्यादि।

(vii) परिस्थितियो के अनुकूल सुझाव का होना
(***Suggestion favourable to situations***)

जब सुझाव परिस्थितियों के अनुकूल होता है तो शीघ्र स्वीकार कर लिया जाता है। जसे साम्यवादी को समझाने के लिये साम्यवादी कहते हैं कि हमारा वाद पूंजीपतियो को समाप्त करेगा और अन्न एवं वस्त्र सबको दिलायेगा। यह बात परिस्थिति के अनुकूल है। यही कारण है कि साम्यवाद दरिद्र देशों में सरलता से फैल जाता है।

(viii) जटिल समस्याओं के सम्बन्ध में

(Regarding complex problems)

यदि समस्याएं जटिल होती हैं और उनके सम्बन्ध मे कोई सुझाव दिया जाता है तो वह शीघ्र स्वीकार कर लिया जाता है। इसका कारण स्पष्ट है कि वे उन बातों को समझ ही नहीं पाते हैं जैसा कि हम दैनिक जीवन मे लोगों को यह कहते हुए पाते हैं कि ईश्वर ऐसा करता है, उसकी इच्छा इत्यादि।

(ix) अन्य विश्वासों के अनुरूप होना (To be like other beliefs)

सुझाव वह शीघ्र स्वीकार किया जाता है जो कि व्यक्तियों के अन्य विश्वासों के अनुरूप होता है। शेष विश्वास इसको मनवाने के लिये आधार बन जाते हैं।

(x) प्रकृति एवं चरित्र की असमानताएँ

(Dissimilarities of Nature & Character)

सुझावों को स्वीकार करने मे व्यक्ति की प्रकृति भी एक महत्वपूर्ण भाग लेती है। यदि प्रकृति दूसरों की बात मानने वाली है या उसका दब्बू स्वभाव है तो सुझाव शीघ्र ही स्वीकार कर लिया जायगा।

यह व्यक्तियों के चरित्र पर भी आधारित है कुछ लोग प्रत्येक कार्य समझ कर करते हैं। अत उनसे यह आशा नहीं की जा सकती कि बिना सोचे समझे वे किसी बात को स्वीकार कर लेंगे।

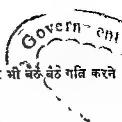
सुझाव के स्वरूप (Forms of Suggestion)

सुझाव निम्न प्रकार के हो सकते हैं:—

१. भाव चालक सुझाव (Ideo-Motor Suggestion)
२ प्रतिष्ठा सुझाव (Prestige Suggestion)
३. स्वतः सुझाव (Auto-Suggestion)
४. सामूहिक सुझाव (Mass-Suggestion)
५. प्रतिषेध सुझाव (Contra Suggestion)

(१) भाव चालक सुझाव (Ideo-Motor Suggestion)

यह सुझाव मस्तिष्क सम्बन्धी ज्ञान तन्तुओं (Sensory nerves) में प्रारम्भ होता है। इस क्षेत्र मे बिनेट (Binet) ने अनेक अवलोकन एवं परीक्षण किये हैं। यह सुझाव अचेतन अवस्था में होता है। हमारे अचेतन मस्तिष्क मे यह जन्म लेकर हमारे ऊपर प्रभाव डालता है। उदाहरणस्वरूप हम नृत्य



देख रहे हैं। थोडी देर से नर्तकी के साथ साथ हमारे पैर भी बैठे बैठे गति करने लगते हैं।

(२) प्रतिष्ठा सुझाव (Prestige Suggestion)

इसके विषय मे हम काफी लिख चुके हैं। यहाँ पर यह समझ लेना पर्याप्त होगा कि इसका अत्यधिक प्रभाव होता है। पण्डित नेहरू कहीं भाषण देने जाय तो लाखों लोग एकत्रित हो जाते हैं। जिस चलचित्र मे नरगिस, मधुबाला, वैजयन्तीमाला, सुरैया, राजकपूर, दिलीप कुमार, अशोक कुमार इत्यादि प्रसिद्ध सिने कलाकार (Cine Artists) होते हैं वह बडी धूमधाम से चलता है।

इस्टाब्रुक ने लिखा है कि यह सुझाव "सब कुछ या कुछ नही" (All or nothing type) प्रकार का होता है।

(३) स्वत सुझाव (Auto Suggestion)

इस प्रकार के सुझाव मे व्यक्ति स्वय अपने लिये सुझाव निर्दिष्ट करता है। इसमे उस व्यक्ति का मन उसे सुझाव देता है। इस प्रक्रिया को पार्ट करना कह सकते हैं।

(४) सामूहिक सुझाव (Mass Suggestion)

यह सुझाव समूह द्वारा दिया जाता है। इसमे व्यक्ति अनुभव करता है कि विशिष्ट कार्य जब समूह कर रहा है तो उसे करने मे क्या हानि है। वह अपनी शक्ति को बढी हुई समझता है।

प्रतिषेध सुझाव (Contra Suggestion)

जसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि इसका प्रभाव उल्टा होता है। जो सुझाव दिया जाता है, सुझाव पाने वाला उसके विपरीत कार्य करता है। जब एक सुझाव अत्यधिक जोर देकर दिया जाता है तो इसका प्रभाव विपरीत होता है। एक बार एक न्यायाधीश ने ज्यूरी (Jury) के सदस्यों को जोर देकर कहा कि उन्हें अमुक प्रकार का निर्णय देना है। इसका फल यह हुआ कि उन्होने उसके सुझाव के विपरोत निर्णय दिया। ऐसा कई बार होता है कि जब सुझाव देने वाला ग्राहकर्त्ता की प्रतिष्ठा की चिन्ता नहीं करते हुए आक्रमण-कारी रूप मे सुझाव देता है तो उसका विपरीत प्रभाव होता है।

सुझाव-ग्रहण-क्षमता और सुझाव में अन्तर
(Difference between Suggestibility and Suggestion)

साधारणतया मनोवैज्ञानिक सुझाव और सुझाव-ग्रहण क्षमता मे कोई

अन्तर नहीं मानते हैं, परन्तु कुछ दोनों मे अन्तर मानते हैं। किम्बाल यंग लिखता है, "सुझाव को उत्तेजक माना जा सकता है और सुझाव-ग्रहण-क्षमता वह आन्तरिक पहलू है जो कि उससे सम्बन्धित है।"[१]

कई विद्वानो ने सुझाव-ग्रहण-क्षमता को आन्तरिक मानसिक क्रिया बताया है जो कि मस्तिष्क को ऐसा बना देती हैं कि वह शीघ्र सुझाव स्वीकार कर ले।

कुछ विद्वानों ने दो सिद्धान्त सुझाव के विषय मे बताये हैं:—(१) एक विशिष्ट प्रकार की उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया जो कि दूसरी प्रतिक्रियाओ से स्वभाव मे भिन्न होती हैं, पाई जाती हैं और इन विशेष प्रकार की प्रतिक्रियाओं को सुझाव का नाम दिया जाता हैं। (२) व्यक्ति इन विशिष्ट प्रकार की प्रतिक्रयाओ के करने मे भिन्न भिन्न शक्ति रखते हैं और इन व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण आधारभूत व्यक्तित्व के लक्षण हैं, इन लक्षणों को सुभाव-ग्रहण-क्षमता का नाम दिया है।

ये दोनो एक दूसरे के पूरक हैं। कोई व्यक्ति एक सुझाव को क्यों स्वीकार करता है? इसका उत्तर यह है कि उसमे सुझाव-ग्रहण-क्षमता पाई जाती हैं और यदि यह प्रश्न किया जाता है कि किसी व्यक्ति मे सुझाव-ग्रहण क्षमता क्यों पाई जाती है? इसका उत्तर यह दिया जाता है कि वह प्रारम्भ से ही सुझावों को स्वीकार करता आया है, अत उसके अन्दर सुझाव-ग्रहण-क्षमता (Suggestibility) का विकास हो गया हैं अतः स्पष्ट हैं कि पहली धारणा दूसरी पर और दूसरी पहली पर अवलम्बित हैं।

इस कारण से कुछ मनोवैज्ञानिक इसे स्पष्ट मनोवैज्ञानिक शक्तियां मानने को तैयार नहीं हैं[२]

सुझावों का वर्गीकरण (Classification of Suggestions)

सुझाव को निम्न वर्गों मे बाँटा जा सकता है.—

१. प्रत्यक्ष सुझाव (Direct Suggestion)

[१] "Suggestion may be considered the stimulus and suggestibility the internal phase related thereto." Young, Kimbal, 'A Handbook of Social Psychology,' p. 110, Routledge and Kegan Paul Ltd, London, Fifth impression, 1953

[२] Kretch, D. and Crutctfield, R. S., "Theory and Problems of Social Psychology," McGraw-Hill Book Co. Inc. (1948), p. 332.

२ परोक्ष सुझाव (Indirect Suggestion)
३. सकारात्मक सुझाव (Positive Suggestion)
४. नकारात्मक सुझाव (Negative Suggestion)

(१) प्रत्यक्ष सुझाव (Direct Suggestion)

प्रत्यक्ष सुझाव उस सुझाव को कहते हैं जिसमे स्पष्ट रूप से लक्ष्य को व्यक्त कर दिया जाता है। इस प्रकार के सुझाव व्यापारिक विज्ञापनों मे अत्यधिक पाये जाते हैं।

(२) परोक्ष सुझाव (Indirect Suggestion)

परोक्ष सुझाव वह है जिसमे लक्ष्य स्पष्ट नहीं किया जाता बल्कि लक्ष्य की भूमिका का निर्माण हो जाता है। उदाहरणस्वरूप चुनाव के दिनों मे लोगों को यह सुझाव दिया जाता है कि उम्मीदवार मे ये विशेष गुण होने चाहिए। इससे लक्ष्य स्पष्ट नहीं होता। बाद मे उम्मीदवार का नाम बताया जाता है और यह भी कहा जाता है कि वह आवश्यक गुण वाला व्यक्ति है।

(३) सकारात्मक सुझाव (Positive Suggestion)

सकरात्मक सुझाव वे सुझाव है जो किसी कार्य को करने के लिये प्रेरणा देते हैं।

(४) नकारात्मक सुझाव (Negative Suggestion)

नकारात्मक सुझाव वे सुझाव हैं जो किसी कार्य को न करने के उद्देश्य से दिये जाते हैं जैसे नगरपालिका या विकास बोर्ड के 'पानी बचाओ आन्दोलन' मे वे सुझाव देते हैं "जल व्यर्थ नष्ट न कीजिए"।

अनुकरण (Imitation)

अनुकरण शब्द का प्रयोग बिना किसी रोकथाम के हुआ है। इसको इन कार्यों के अनुकरण मे प्रयोग किया गया है—जैसे जब दूसरे जम्हाई लेते हैं तो जम्हाई लेना, जब दूसरे दौडते हैं तब दौड़ना, मातृभाषा को सीख जाना या समाज के अनुरूप व्यवहार करना। कहने का तात्पर्य यह है कि सारे ही कार्य, जो कि चेतनावस्था या अचेतनावस्था मे किये जाते हैं, इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। बेगहॉट (Bagehot) और टार्ड (Trade) ने तो यह सब कुछ अनुकरण के अन्तर्गत सम्मिलित कर लिया है जिसे सांस्कृतिक मानवशास्त्र मे प्रसरण (Diffusion) कहते हैं। बाल्डविन (Baedwin) ने तो यहाँ तक किया है कि सारी ही साधारण एवं जटिल सीखने की प्रक्रियाओं को अनुकरण

के अन्तर्गत माना है। टार्ड अनुकरण के अन्तर्गत सुझाव और सहानुभूति को भी मानता है।

इसकी परिभाषा करना इन परिस्थितियों में कठिन है। इस पर भी विद्वानों ने निम्न परिभाषाएँ की हैं।

थाउलस लिखता है, "अनुकरण एक प्रतिक्रिया है जिसके लिये उत्तेजक दूसरे की उसी प्रकार की प्रतिक्रिया का ज्ञान है।"[१]

मैक्डूगल इन शब्दों में इसकी परिभाषा करता है, 'अनुकरण केवल एक मनुष्य द्वारा उन क्रियाओं, जो कि दूसरे के शरीर सम्बन्धी व्यवहार से सम्बन्धित हैं, की नकल करने पर लागू होता है।"[२]

मीड ने लिखा है, "अनुकरण दूसरों के व्यवहारों या कार्यों को जान बूझ कर अपनाने को कहते हैं।"[३]

अनुकरण का वर्गीकरण (Classification of Imitation)

मैक्डूगल ने अनुकरण को पाँच भागों में विभाजित किया है, उनमें से पहले तीन स्पष्ट हैं और शेष दो अस्पष्ट।

(१) द्योतक क्रियायें या अनुकरण
(Expressive Actions or Imitations)

द्योतक अनुकरण वह है जो एक दूसरे के भाव के कारण उत्पन्न होता है। यह अनुकरण सहानुभूति की तरह का होता है।

एक बच्चा जब दूसरे को मुस्कराते देखता है तो मुस्करा देता है या दूसरे बच्चे को रोते सुनकर चिल्लाने लगता है या दूसरे बच्चों को भय से पलायन करते देखकर स्वयं भी उनका अनुकरण करता है और भागने लगता है। इस प्रकार का अनुकरण प्रत्येक पशुजातियाँ करती है। भीड़ व्यवहार बहुत कुछ इसी प्रक्रिया के कारण होता है।

---

[१] "Imitation is a reaction for which the stimulus is the perception of another's similar reaction." Thouless, R H., 'General and Social Psychology,' p 251, Third Ed 1951

[२] "Imitation is applicable only to copying by one individual of the actions, the bodily movements of another." McDougall, W. 'An Introduction to Social Psychology'.

[३] "Imitation is self conscious assumption of another's acts or roles" Mead, George H. Quoted by K. Young, 'A Handbook of Social Psychology,' p. 110.

(२) भावचालक अनुकरण (Ideo Motor-Imitation)

भावचालक अनुकरण वह अनुकरण है जो भावों द्वारा चालित होता है। इसे जान बूझकर या स्वत. अनुकरण भी कहते हैं। इसी कारण बच्चे दूसरो की नक्ल किया करते हैं।

(३) आदर्श व्यवहारो का अनुकरण
(Imitation of Ideal Actions)

कई बार ऐसा होता है कि हम किसी व्यक्ति विशेष को आदर्श मान लेते हैं और उसके आदर्शों का अनुकरण करते हैं।

(४) जब किसी कार्य के फल का अनुकरण किया जाता है।
(५) वे छोटे बच्चे, जो जान बूझ कर अनुकरण नहीं कर सकते, अनुकरण करते हैं।

जिन्सबग ने अनुकरण को तीन वर्गों में विभाजित किया है:—

(१) प्राणीशास्त्रीय अनुकरण (Biological Imitation)

यह अनुकरण अचेतन होता है और मूल प्रवृत्ति व्यवहारों के रूप मे पाया जाता है।

(२) भावचालक अनुकरण (Ideo Motor Imitation)

इसका विवरण मैकडूगल के वर्गीकरण मे दे चुके हैं। यह वर्गीकरण हमे समाज के अनुरूप बनाने एव स्वभाव के निर्माण करने में बडी सहायता करता है।

(३) विवेकशील या सप्रयोजन अनुकरण
(Rational or purposeful Imitation)

यह वह अनुकरण है जो जान बूझ कर किया जाता है। उदाहरणस्वरूप जापान और टर्की द्वारा पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण करना।

सहानुभूति (Sympathy)

सहानुभूति एक प्रकार की कोमलता है जो दूसरे व्यक्ति, जिसके साथ सहानुभूति की जाती है, के साथ होती है। यह एक विशिष्ट प्रकार का उद्वेग है जैसे दूसरे के दु ख मे दु खी होना और दूसरे के सुख मे सुखी होना। इसका प्राचीन एव आधारभूत नियम यह है कि जो भावना या उद्वेग दूसरों मे हो उसी भावना या उद्वेग का अनुभव स्वय मे भी होने लगता है।

इसकी परिभाषा करते हुए जयदेव सिंह ने लिखा है, "यह दूसरो की

भावना का शीघ्र बोध होना, एक समूह के सदस्यो मे उद्वेगों का उत्पादकत्व (Induction) होता है।'[१]

सहानुभूति सामूहिक मूल प्रवृत्ति वाले सम्पूर्ण पशुओं मे पाई जाती है। ये पशु जब भयभीत होकर या क्रुद्ध होकर आवाज करते हैं तो इनकी जाति (Species) के अन्य सदस्य उस आवाज को सुनकर वैसी ही आवाज करने लगते हैं।

सहानुभूति को प्रभावपूर्ण बनाने वाली परिस्थितियां
(Conditions for effective sympathy)

(१) समूह के प्रति सहानुभूति

सहानुभूति अपने अपने समूह के सदस्यो के प्रति अत्यधिक होती है। यदि चीन मे एक लाख व्यक्ति मर जांय तो ब्यावर के निवासियों को कोई चिन्ता नहीं होगी और यदि ब्यावर के दस व्यक्ति भी चकरेडा के तालाब मे डूब कर मर जांय तो ब्यावर की जनता की सहानुभूति उमड़ पड़ेगी।

(२) परिस्थिति को स्वय देखना

सहानुभूति जागृत होने में विपत्ति को स्वय देखना भी एक महत्वपूर्ण तत्व है। मान लीजिये एक कार दुघटना हो जाती है और कुछ व्यक्ति मर जाते हैं तो जिन व्यक्तियों ने उसकी दुदशा को देखा है उनमे अथाह सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है और जो लोग सुनते हैं वे कुछ दु ख का अनुभव करते हैं। जो व्यक्ति समाचार पत्र मे पढ़ते है वे यह कहते हुए पृष्ठ उलट देते हैं कि घटनायें होती रहती हैं।

(३) प्रतीको एव चिन्हो द्वारा प्रदर्शन

दुर्घटनाओं का ऐसे प्रतीको एव चिन्हों द्वारा प्रदर्शन, जो लोगों कि समझ मे आ सके, सहानुभूति उत्पन्न करता है। आसाम मे ब्रह्मपुत्र हर वर्ष हाहाकार करती हुई लाखों व्यक्तियों के अरमानों को डुबो देती है। लोग इसे समाचार पत्र मे पढते है परन्तु कोई विशेष प्रभाव नहीं पडता। परन्तु जब यही दृश्य भारतीय समाचार चलचित्र मे प्रदर्शित किया जाता है तो सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है।

---

[१] 'It is sensitiveness to other person's feelings, the induction of emotions among members of a group" Jaldev Singh, 'A manual of Social Psychology,' p. 49. ibid.

सहानुभूति मूल प्रवृत्ति नहीं है (Sympathy is not an instinct)

कुछ लेखको ने सहानुभूति को एक मूल प्रवृत्ति माना है परन्तु इस विचार का मेकडूगल सरीखे व्यक्ति ने भी विरोध किया है। वह इन्हें मिथ्या मूल प्रवृत्तियां (*Pseudo-Instincts*) कहता है।

सहानुभूति मूल प्रवृत्ति के कारण नहीं होती परन्तु वह मस्तिष्क के एक विशिष्ट प्रकार के अनुकूलन के कारण उत्तेजित होती है।

हमने सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति के अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार पर विचार किया। अब अध्याय २६ में इनके सामाजिक जीवन में कार्य एवं महत्व पर विचार करेंगे।

प्रश्न

१. आप सुझाव, सहानुभूति और अनुकरण शब्दों से क्या समझते हैं ?
(What do you understand by the term suggestion, sympathy and imitation ?)

२. सुझाव पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
(Write short note on suggestion.) Rajputana, 1953.

SELECTED READINCS

1. K. Young, 'A Handbook of Social Psychology' Chapter V.
2. McDougall, 'Social Psychology' Chapter IV.



अध्याय ५

सामाजिक जीवन में मूल प्रवृत्तियां

(Instincts in social life)

सामाजिक प्रक्रियायें एवं व्यवहार को मनोवैज्ञानिकों ने दो विभिन्न विचारधाराओं द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है। पहली विचारधारा के लोग बुद्धिवादी (Intellectualists) और दूसरी विचारधारा के लोग अबुद्धिवादी (Anti Intellectualists) कहलाते हैं। बुद्धिवादियों का विचार है कि प्रत्येक मानव क्रिया एक मानसिक प्रक्रिया या तर्क का फल है जो कि मनुष्य अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये निश्चित् करता है। वह प्रेरणा और मूल प्रवृत्तियों को अपनी बुद्धि के अनुसार ढाल लेता है। समाज मे हम वयस्कों से सम्बन्ध रखते हैं जिनका व्यवहार केवल प्रेरणाओं और मूल प्रवृत्तियो पर ही आधारित नहीं होता बल्कि विचार और अनुभव पर भी आधारित है। अत हमे सामाजिक प्रक्रिया को चेतन विचार शक्ति के आधार पर खोजना चाहिये। सामाजिक व्यवहार का रहस्य बुद्धि मे ही निहित है।

अबुद्धिवादियों का विचार यह है कि समूहों या समुदायों के व्यवहार को विवेकशील एवं चेतन विचारशक्ति का फल मानना बडी भ्रान्ति है। अनुभव अवलोकन एवं शिक्षा से फल व्यक्तियो तक ही सीमित हैं और समुदायों एवं बडे बडे सामाजिक समूहों का व्यवहार प्राकृतिक स्वभाव या मूल प्रवृत्तियों मे निहित है। वह पशु प्रकृति मे गहरी जडें जमाये हुए है और जिनका तनिक भी या अत्यल्प भी सम्बन्ध चेतन विचार शक्ति से नहीं है।

सामाजिक व्यवहार का विश्लेषण तीन प्रकार [illegible] किया जा सकता है।

(१) सामाजिक समूहों के बनने की प्रकृति जन्मजात है। इस कारण से मनुष्यों मे सामाजिक सहयोग की प्रवृत्ति पाई जाती है। इस विचारधारा [illegible] अबुद्धिवादियो ने समर्थन किया है।

(२) वे भावायें एवं प्रकृतियां जो कि स्वभाव में सामाजिक हैं, व्यक्ति सामाजिक पर्यावरण से ग्रहण करता है।

(३) यह मत गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों (Gestalt psychologists) द्वारा प्रतिपादित किया गया है। उनका कहना है कि मनुष्य विद्युत परमाणुओं के समान है जो कि एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं और सहयोग करने लगते हैं।

इस अध्याय मे हम प्रथम विचारधारा पर प्रकाश डालेंगे। इस विचारधारा को भी प्रमुख चार भागों मे विभाजित किया जाता है।

(१) डा० मैकडूगल का सिद्धान्त

(२) डा० ट्रोटर का सिद्धान्त

(३) अन्य मूल प्रवत्तियों का सिद्धान्त

(४) टार्ड और बेगहॉट का सिद्धान्त

(१) डा० मैकडूगल का सामाजिक व्यवहार के मौलिक तत्वो के विषय मे विचार

(Dr. McDougall's *view of the basic factors of social behaviour*)

डा० मैकडूगल का मत है कि सामाजिक भावना का आधार वात्सल्य उद्वेग (Tender-Emotion) है। यह मौलिक उद्वेग मूल प्रवृत्ति सन्तान कामना (Parental instinct) का सहवर्ती उद्वेग है। यही उद्वेग हमारे मे विकसित होता है और विकसित होकर उपकारी भावनाओ को उत्तेजित करता है। यह सम्पूर्ण उपकारी उद्वेगों का श्रोत है।

आलोचना

(१) सामाजिक भावनायें जटिल नवीन प्रतिक्रियायें होती हैं न कि केवल पुरानी भावनाओं की विस्तारमात्र। आज के जीवन मे व्यवहार इतना जटिल हो गया है कि इसे केवल वात्सल्य उद्वेग के विस्तारमात्र से नहीं समझाया जा सकता। वास्तव मे सामाजिक पर्यावरण एक महत्वपूर्ण भाग सामाजिक जीवन के बनाने मे लेता है।

(२) वात्सल्य उद्वेग सन्तान कामना की मूल प्रवृत्ति का सहवर्ती उद्वेग है। यह उद्वेग साधारणतया एक परिवार के सदस्यों के बीच उत्पन्न होता है। सामाजिक जीवन में परिवार से बहुत दूर के व्यक्तियों से सम्बन्ध होता है। आज के युग मे जबकि विश्व बन्धुत्व की ओर बढ़ रहे हैं और प्रत्येक मनुष्य विश्व समुदाय के कार्यों मे सहयोग दे रहा है तो यह सोचना कि सारा व्यवहार इस मूल प्रवृति के कारण है, मिथ्या है।

(३) प्रत्येक उपकारी व्यवहार को कोमल उद्वेग के विस्तारमात्र से नहीं समझाया जा सकता। उदाहरण स्वरूप ज्ञान एवं सौन्दर्य के प्रति प्रेम किसी भी प्रकार वात्सल्य उद्वेग पर आधारित नहीं है।

(४) जब कोई उद्वेग मनुष्य मे उत्तेजित होता है तो वह उसे एक प्रकार के व्यवहार करने के लिये ही बाध्य नहीं करती बल्कि एक उद्वेग के कारण अनेक दिशाओं मे मनुष्य व्यवहार करता है। इस दिशा का निश्चय कौन करता है? यह बात महत्वपूर्ण है।

(५) कोई व्यक्ति किसी की आज्ञा को स्वीकार करता है। मैक्डूगल के अनुसार वह आज्ञाकारी इसलिये है क्योंकि आज्ञापालन की मूल प्रवृत्ति उसमे है। यह सामाजिक व्यवहार का कोई विश्लेषण नहीं हुआ कि एक व्यक्ति दुष्ट इसलिये है क्योंकि दुष्टता की मूल प्रवृत्ति उसमे पाई जाती है। दुष्टता की मूल प्रवृत्ति का पाया जाना इसलिये सिद्ध होता है क्योंकि वह दुष्ट है। वास्तव मे मूल प्रवृत्तियाँ व्यवहारों के एक वर्ग का नाम है जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं।

(६) सामाजिक समूहों का निर्माण कैसे हुआ और व्यक्ति सामाजिक नियमों के अनुसार क्यों व्यवहार करता है, इसे मूल प्रवृत्तियों के आधार पर नहीं समझाया जा सकता। इसके लिये शिक्षा, अवलोकन, अनुभव इत्यादि की आवश्यकता होती है।

(२) डा० ट्रोटर का सामाजिक व्यवहार के मौलिक तत्वों के विषय मे विचार

(Dr Trotter's views of the basic factors of social behaviour)

डा० ट्रोटर ने सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार को सघान मूल प्रवृत्ति (Gregarious instinct) के कारण बताया है। उसका कथन है कि इस मूल प्रवृत्ति के प्रभाव से न केवल सदस्य झुण्ड मे रहते हैं अपितु उनके मस्तिष्क की बनावट मे आश्चर्यजनक ऐसा परिवर्तन होता है कि वे एक दूसरे के साथ सहयोग करने लगते हैं। उनके अन्दर सुभाव ग्रहण-क्षमता (Suggestibility) इतनी बढ जाती है कि जो कुछ भी समाज के प्रतिष्ठा प्राप्त विचार होते हैं, शीघ्र स्वीकार कर लिये जाते हैं। कोई भी विचार चाहे जितना अतार्किक क्यों न हो बिना किसी विचार के स्वीकार कर लिया जाता है। समूह को एक महत्वपूर्ण एवं सर्वश्रेष्ट स्थान मनुष्य इसी मूल प्रवृत्ति के कारण देता है। इसी कारण समाज द्वारा निर्धारित सारे नियमों एवं व्यवहारों को मनुष्य स्वीकार करता चला जाता है। सम्पूर्ण सामाजिक व्यवहार का रहस्य इस सघान मूल प्रवृत्ति (Gregarious Instinct) मे निहित है।

आलोचना (Criticism)

(१) संघात मूल प्रवृति (Gregarious Instinct) एक मौलिक मूल प्रवृति नहीं है बल्कि एक ऐसा शब्द है जिसके अन्दर कई तथ्य सम्मिलित हैं।

(२) सुझाव ग्रहण-क्षमता (Suggestibility) सघात मूल प्रवृति (Gregarious instinct) के कारण सदैव उत्तेजित नहीं होती है बल्कि इसके लिये विभिन्न परिस्थितियों का होना आवश्यक होता है। पिछले अध्याय मे हमने सुझाव को प्रभावपूर्ण बनाने की परिस्थिति पर विचार किया था।

(३) सघात मूल प्रवृत्ति (Gregarious instinct) के कारण मनुष्य एक समूह मे एकत्रित हो सके होंगे या हो सकते हैं परन्तु यह एक असङ्गठित समूह, जिसे भीड़ कह सकते हैं, ही बनेगा। इसके विपरीत समाज एक सुसगठित सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। अत केवल समूह मे एकत्रित होने की मूल प्रवृति हमारे व्यवहार को नहीं समझा सकती।

(४) मानव व्यवहार इतना जटिल है और 'सामूहिक व्यवहार उससे भी जटिल। इस कारण से मानव सामाजिक सङ्गठन को एक मूल प्रवृत्ति का परिणाम नहीं स्वीकार किया जा सकता। सामाजिक व्यवहार कई तथ्यो पर आधारित है। यह जन्मजात भी है और शिक्षा, अवलोकन तथा अनुभव के फलस्वरूप भी।

(५) डा० ट्रोटर का यह कहना, कि समूह मे एकत्रित होते ही मानसिक बनावट बदल जाती है, अतार्किक है।

(६) डा० ट्रोटर ने मानव व्यवहार की प्रक्रिया को बड़ी सरल रीति से समझाने का प्रयत्न किया है। यह उत्तर अवैज्ञानिक सा दिखता है। उदाहरणस्वरूप जैसे लोग कुछ भी बुद्धि की पहुच के बाहर की घटना होने पर सरल सा उत्तर देते हैं, "ईश्वर ने किया होगा, ईश्वर इच्छा"। इसी प्रकार ट्रोटर ने भी सामाजिक व्यवहार को समझाया है कि यह सारा व्यवहार सघात मूल प्रवृत्ति (Greagarious instinct) के कारण होता है।

(७) डा० ट्रोटर, ने ऐसा लगता है, सामाजिक व्यवहार का विश्लेषण अनेक परिस्थितियों मे करने का प्रयत्न नहीं किया, इसी कारण उसने एक मूल प्रवृति को इतना महत्व दिया है।

(३) अन्य मूल प्रवृत्तियो के सिद्धान्त
(Other Theories of Instincts)

डा० मैकडूगल और डा० ट्रोटर ने सामाजिक व्यवहार को एक विशिष्ट मूल प्रवृति के कारण बताया है। कुछ ऐसे भी विद्वान हैं जो सामाजिक

अध्याय ६

समाज में सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति के कार्य एवं महत्व

(Role and importance of Suggestion, Imitation and Sympathy in Society)

अभी पिछले अध्याय मे हमने मूल प्रवृत्तियो के महत्व को समझा। इस अध्याय मे सुझाव, अनुकरण तथा सहानुभूति का समाज मे क्या काय और महत्व हैं इस पर प्रकाश डालेंगे। टार्ड और बेगहॉट [illegible] सिद्धान्त पर भी विचार करेंगे।

बेगहॉट[1] और टार्ड[2] का सिद्धान्त

(Theory of Bagehot and Tarde)

बेगहॉट और टार्ड मे सामाजिक सगठन एव व्यवहार को सुझाव अनुकरण के सिद्धान्त द्वारा समझाने का प्रयत्न किया है। सर्वप्रथम १८७३ ई० मे बेगहॉट ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसी सिद्धान्त को २३ वर्ष उपरान्त टार्ड ने अत्यधिक विस्तृत रूप से पुन प्रस्तुत किया।

बेगहॉट का सिद्धान्त

बेगहॉट ने सामाजिक सगठन एव व्यवहार का मौलिक आधार अनुकरण के सिद्धान्त मे पाया। बच्चो मे फैशन, लिखने की शैली राजनैतिक और धार्मिक व्यवहार, सब मे ही अनुकरण पाया जाता है। उसका कहना है कि अनुकरण स्वतः एवं अचेतन होता है और यह मानव समूहो पर आश्चर्यजनक

---

[1] Bagehot, 'Physics and Politics', 1873

[2] Tarde, 'Lois de, I' imitation 1896 (The Laws of Imitation by Parsons)

प्रभाव डालता है। अनुकरण के अन्तर्गत वह सुझाव की प्रक्रिया को भी सम्मिलित कर लेता है। उसने अनुकरण को ही रीति रिवाज एवं सामाजिक रूढ़ियों का जन्मदाता बताया है। ये रूढ़ियाँ ही मनुष्यों को सामाजिक व्यवहार से अनुरूप होने के लिये बाध्य करती हैं और सामाजिक नियन्त्रण रखती हैं।

टार्डे का सिद्धान्त

ऐसा लगता है कि टार्डे ने बेगहॉट के सिद्धान्त से अलग रह कर अपने अनुकरण के सिद्धान्त का निर्माण किया है। उसके सिद्धान्त की प्रमुख विशेषतायें निम्न हैं —

(१) उसका कहना है कि सामाजिक प्रगति एक समूह के सदस्यों के मानसिक परस्पर सम्बन्धों का फल होती है। यह परस्पर सम्बन्ध तीन रूपों में प्रगट होता है—(i) पुनरावृति (Repetition) (ii) विरोध (Opposition) (iii) अनुकूलन (Adaptation)।

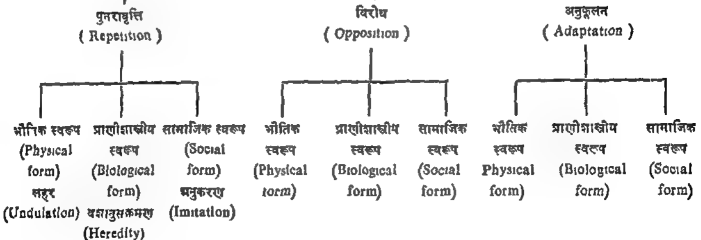
वह इस सिद्धान्त को न केवल सामाजिक प्रक्रिया में मानता है बल्कि भौतिक प्रक्रिया में भी मानता है। इसके विभिन्न स्वरूपों को हम एक चार्ट द्वारा व्यक्त कर सकते हैं। (पृष्ठ ३६९ पर चार्ट देखिये)

यहाँ हम सामाजिक दृष्टिकोण से विचार करेंगे। पुनरावृत्ति का सामाजिक स्वरूप अनुकरण है और यह सामाजिक प्रगति में एक महत्वपूर्ण भाग लेता है। विरोध का सामाजिक स्वरूप युद्ध, प्रतिद्वन्दिता प्रतियोगिता, विचार विमर्श एवं वाद विवाद होते हैं। अनुकूलन का सामाजिक स्वरूप अनुकूलन है। सामाजिक अनुकूलन से तात्पर्य होता है सामाजिक पर्यावरण से अनुकूलन करना। इसके विषय में हम पर्यावरण के अर्थ वाले अध्याय में विस्तृत विवेचना कर चुके हैं।

(२) सम्पूर्ण सामाजिक प्रक्रिया को अनुकरण और आविष्कार पर आधारित किया जा सकता है।

(३) किसी भी समाज की प्रगति अन्वेषण पर आधारित है।

(४) अन्वेषण की शक्ति नवीन विचारों के सम्बन्धों पर आधारित होती है। जिस देश में जनसंख्या अधिक होती है तो वहाँ पर अधिक आविष्कारों की सम्भावना रहती है।



पारस्परिक सम्बन्ध
(Inter action expresses)
पुनरावृत्ति
(Repetition)
विरोध
(Opposition)
अनुकूलन
(Adaptation)
भौतिक स्वरूप
(Physical form)
लहर
(Undulation)
प्राणीशास्त्रीय स्वरूप
(Biological form)
वंशानुसंक्रमण
(Heredity)
सामाजिक स्वरूप
(Social form)
अनुकरण
(Imitation)
भौतिक स्वरूप
(Physical form)
प्राणीशास्त्रीय स्वरूप
(Biological form)
सामाजिक स्वरूप
(Social form)
भौतिक स्वरूप
Physical form)
प्राणीशास्त्रीय स्वरूप
(Biological form)
सामाजिक स्वरूप
(Social form)

(५) किसी आविष्कार का स्वीकार किया जाना अनुकरण पर आधारित होता है।

(६) सामाजिक अनुरूपता एवं सहृदयता अनुकरण पर आधारित है। कोई भी विचार या कार्य प्रणाली का जब दूसरों के द्वारा पुनरावर्तन किया जाता है तभी वह समाज में फैलती है और सामाजिक अनुरूपता उत्पन्न होती है।

(७) किसी आविष्कार का अनुकरण दो सामाजिक कारणों पर आधारित रहता है—(i) तार्किक (Logical), (ii) असाधारण तार्किक (Extra-logical)।

जब कोई नया विचार आता है और यदि वह उस समय के समाज द्वारा मान्य विचारों के अनुसार होता है तो वह शीघ्र स्वीकार कर लिया जाता है। इसे तार्किक सामाजिक प्रक्रिया कहते हैं।

असाधारण तार्किक वे कारण होते हैं जो समाज के सर्वमान्य विचारों के विपरीत होते हुए भी कुछ परिस्थितियों के कारण स्वीकार कर लिये जाते हैं। वे कारण निम्न हैं—

(i) अनुकरण अन्दर से बाहर की ओर बढ़ता है। इसका अभिप्राय यह है कि किसी विचार को स्वीकार करने एवं किसी कार्य को करने के पूर्व हमारी मानसिक स्थिति उसके पक्ष में होनी चाहिए। उदाहरणस्वरूप यूरोप में पहले फ्रेंच साहित्य के प्रति लोगों की रुचि बढ़ती गई। इस बढ़ती हुई रुचि ने फ्रेंच वेशभूषा के लिये आधार निर्माण किया। कुछ समय उपरान्त फ्रेंच वेशभूषा सम्पूर्ण यूरोप पर छा गई।

(ii) कई बार आविष्कार करने वाले की प्रतिष्ठा भी एक महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है। यद्यपि उस आविष्कार को लोग स्वीकार करने की साधारण स्थिति में तैयार न होते, परन्तु वह आविष्कार एक विशिष्ट प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा हुआ है इसलिये उसे स्वीकार कर लिया जाता है। महात्मा गांधी ने खद्दर के कपड़े पहनने का रिवाज इतना बढ़ा दिया कि आज बड़े बड़े लोग पहिनते हैं।

(iii) कई बार नई वस्तु में एक प्रकार का आकर्षण होता है। इस कारण लोग स्वीकार कर लेते हैं।

टार्ड ने कहा है कि "समाज अनुकरण है।" उसने अनुकरण के अन्तर्गत सुझाव और सहानुभूति सभी मानसिक पारस्परिक सम्बन्धों को सम्मिलित कर लिया है।

आलोचना (Criticism)

(१) इसमे कुछ सन्देह नहीं कि अनुकरण समाज मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि सब कुछ अनुकरण के कारण है।

(२) टार्डे ने अनुकरण के अन्तर्गत सारी ही परस्पर सम्बन्धी मानसिक क्रियाओं को ले लिया है। ऐसा करके उसने अनुकरण शब्द को अर्थहीन बना दिया है।

(३) यह आवश्यक नहीं कि जिस देश में जनसख्या अधिक होगी उस देश मे आविष्कार भी अधिक होंगे। आधुनिक युग मे इङ्गलैंड ने भारत और चीन की तुलना मे बहुत अधिक आविष्कार किये हैं जब कि इङ्गलैंड की आबादी चीन और भारत से कहीं कम है।

(४) अनुकरण को ही सामाजिक व्यवहार का आधारभूत सिद्धान्त नहीं माना जा सकता। सामाजिक व्यवहार के आधारभूत तत्व कोई एक न होकर अनेक होते हैं। वे मूल प्रवृत्तियाँ, सुझाव, सहानुभूति अनुकरण, शिक्षा, अवलोकन, अनुभव, सामाजिक परम्परा एव अन्य तत्वों पर आधारित होते हैं। अत हमे सामाजिक व्यवहार का आधार किसी एक तत्व मे नहीं ढूढना चाहिए।

(५) चार्ल्स बर्ड ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए लिखा है, "हम अनुकरण करना सीखते हैं बजाय इसके कि अनुकरण से सीखें।"[१]

सुझाव, सहानुभूति तथा अनुकरण का सामाजिक जीवन मे महत्व एव कार्यों पर थोड़ा सा विचार हमने बेगहॉट और टार्डे के सिद्धान्त के अन्तर्गत किया है परन्तु यह उचित नहीं है कि उन पर विचार न किया जाय। अत अब हम उनके महत्व एव काम पर पृथक् पृथक् विचार करेंगे।

सामाजिक जीवन मे सुझाव का महत्व
(Importance of Suggestion in Social life)

सुझाव हमारे सामाजिक जीवन पर अत्यधिक प्रभाव डालता है। सुझाव की प्रक्रियाओं से हमारा दैनिक जीवन भरा पड़ा है। पग पग पर

[१] "We learn to imitate rather than learn by imitation" Charles Bird, 'Social Psychology,' p 250. (1940)

सुभाव की प्रक्रिया चलती रहती है। सुझाव के कारण निम्न प्रक्रियायें समाज मे होती हैं।

(१) सुझाव सामाजिक एकता को उत्पन्न करता है जो कि समाज के लिये अति आवश्यक है।

(२) सुझाव नवीन विचारों को फैलाने मे महत्वपूर्ण कार्य करता है।

(३) नेता और अनुगामियो का सम्बन्ध सुझाव के कारण ही चल पाता है। नेता अपने अनुगामियो के सम्मुख विचारों को रखता है और अनुगामी उसे प्रतिष्ठित सुझाव होने के कारण तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं।

(४) समाज के सर्वमान्य नियम एव व्यवस्थायें व्यक्ति द्वारा बिना किसी आलोचना के स्वीकार कर ली जाती हैं। यह प्रतिष्ठित सुझाव के कारण है। व्यक्ति सोचता है कि समाज के सारे व्यक्ति इन्हें स्वीकार करते हैं अत कुछ लाभकारी ही होंगे। अत बिना सोचे समझे उन सुझावों को स्वीकार कर लेता है।

सामाजिक जीवन मे सहानुभूति का महत्व
(Importance of Sympathy in Social life)

सहानुभूति सामाजिक जीवन मे एक महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह मनुष्य एव पशु दोनो ही के जीवन मे समरसता और एकता का निर्माण करती है। पशु जगत की एकता तो केवल सहानुभूति के ही कारण है। डा० मैकडूगल ने इस पर अत्यधिक जोर देते हुए लिखा है 'इस प्रकार की प्राकृतिक सहानुभूति ही वह सीमेन्ट (Cement) है जो कि पशु समाजो को आपस में बांधती है।"[१]

न केवल पशु जगत मे ही इसका महत्व है अपितु सम्पूर्ण मानव सहानुभूति का आधार इन्हीं उद्वेगों मे पाया जाता है। हम अपने दैनिक जीवन मे देखते हैं कि हम बचपन मे जिस साधारण सहानुभूति का अनुभव करते हैं वही हमारे सम्पूर्ण जीवन मे काय करती है। मनुष्य चाहे जितना भी शिक्षा, ज्ञान एव अवलोकन से अपने व्यक्तित्व को बढा ले तथापि जब कभी भी हम किसी दु खी को देखते हैं तो हमारे मे सहानुभूति जागृत हो उठती है और हम भी दु खी हो जाते हैं।

---

१ "Sympathy of this crude kind is the cement that binds Animal societies together" McDougall, W, 'An Introduction to Social Phychology'

एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति दूसरों को भी प्रसन्न कर देता है और एक रोनी सूरत दूसरो को भी रोने के लिये बाध्य कर देती है। मनहूस चेहरों से हमे कितना डर लगता है। जब हम दूसरो के दु खी उद्वेगों को देखते हैं तो हमारे मे भी सहानुभूति के कारण पीडा होने लगती है। जब हम दूसरों को भयभीत देखते हैं तो स्वय भी भयभीत हो उठते हैं। क्रोध, क्रोध को, जन्म देता है। वास्तव मे वात्सल्य उद्वेग हमारे अन्दर कम्पन उत्पन्न कर देता है, जो कि सहानुभूति के ही कारण होता है।

अधिकतर सामाजिक व्यवहार सहानुभूति के कारण होता है। सहानुभूति मित्रता एव एकता की जननी है। याउलस ने उचित ही लिखा है, "नि.सन्देह ही अधिकतर सामाजिक व्यवहार का स्रोत सहानुभूति है।"[1]

सहानुभूति समाज मे उपकारी कार्यों की आधार शिला है। उपकारी सेवायें सहानुभूति के कारण ही होती हैं। लगडे, लूले दु खी, दरिद्रो एव पीडित व्यक्तियों की सहायतार्थ जो भी कार्य किये जाते हैं वे सहानुभूति के कारण ही होते हैं।

सामाजिक जीवन मे अनुकरण का महत्व

(Importance of Imitation in Social life)

अनुकरण सामाजिक जीवन मे एक महत्वपूर्ण कार्य करता है। टार्ड ने तो यहाँ तक कहा है कि 'समाज अनुकरण है", परन्तु ऐसा कहना अतिशयोक्ति होगी। इसमे सन्देह नही कि सामाजिक जीवन मे एकरूपता एव समानता लाने के लिये अनुकरण महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि सारा सामाजिक व्यवहार अनुकरण पर ही आधारित है। निम्न सामाजिक प्रक्रियायें अनुकरण के कारण होती है —

(१) सामान्य भाषा

किसी भी समाज मे एक मातृभाषा या अन्य भाषाओ का विकास होता है। बचपन से ही समाज के सदस्य उसमे बोली जाने वाली भाषा का अनुकरण करते हैं और इसके कारण से एक सामान्य भाषा लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

(२) सामान्य प्रतीक चिह्न एव विचार धारायें

किसी भी सामाजिक समूह के निश्चित चिह्न प्रतीक एव विचारधारा होती हैं जो अनुकरण द्वारा सर्वमान्य एव सामान्य हो जाती हैं। उदाहरण स्वरूप राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गान तथा अन्य चिह्न एव प्रतीक।

---

[1] "Sympathy is unquestionably the source of mu

(३) सामान्य वेशभूषा एव फैशन

प्रत्येक समज की एक विशिष्ट सामान्य वेशभूषा बन जाती है जैसे हमारे देश मे स्त्रियाँ धोतियाँ और साड़ियाँ पहनती हैं। राष्ट्रीय वेशभूषा के रूप मे चूडीदार पाजामा और अचकन का रिवाज बढता जा रहा है। अनुकरण फैशन की बड़ी सहायता करता है।

(४) सामाजिक व्यवहार एव रीति रिवाज

अनुकरण के कारण सामाजिक व्यवहार एव रीति रिवाज भी एक विशिष्ट प्रकार के हो जाते हैं, जसे विवाह करने की पद्धतिया, सम्बोधन करने की रीतियाँ इत्यादि।

(५) आविष्कारो का फैलना

अनुकरण के कारण आविष्कार ससार के एक कोने से समस्त ससार मे फैल जाते हैं।

(६) सामान्य सस्कृति एव सभ्यता

अनुकरण के कारण एक समूह की सस्कृति एव सभ्यता समान हो जाती है। समाज की अधिकांश समानतायें अनुकरण के कारण होती हैं, जयदेव सिंह ने उचित ही लिखा है "सामाजिक एकरूपता एव सदृशता का स्रोत अनुकरण है।"[1]

प्रश्न

१ टार्ड के अनुकरण के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिये और सक्षेप में समालोचना भी कीजिये।
(Explain and briefly comment on Tarde's Theory of Imitation) Rajputana, 1953

SELECTED READINGS

Same as for Chapter XXVII



socialized behaviour' Thouless, R H, 'General and Social Psychology', p. 251, Third Ed, 1953

[1]"The source of social similarity and conformity is imitation" Jaidev Singh, 'A Manual of Social Psychology,' 142, ibid

अध्याय ७

सामूहिक व्यवहार

(Collective Behaviour)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज मे रहना चाहता है और दूसरे व्यक्तियो से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है। कई बार वह समूह में अपनी इच्छा से और कभी अनिच्छा से भाग लेता है। समूह मे व्यवहार करते समय उसका भी व्यवहार परिवर्तित हो जाता है। सम्पूर्ण समूह का व्यवहार बडा ही विचित्र, मनोरञ्जक एव रोमाञ्चकारी होता है। यह व्यवहार जो व्यक्ति समूह के सदस्य हैं उनका जैसा न होकर बिल्कुल ही नवीन एव आश्चर्यजनक होता है।

समूह या मनुष्यों के गुट सङ्गठन की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं। एक सङ्गठित और दूसरे असङ्गठित। सङ्गठित समूह को समाजशास्त्र मे समितियों के नाम से पुकारते हैं। इनके विषय मे विस्तार मे प्रकाश डाला जा चुका है।[1] दूसरे प्रकार के समूह का व्यवहार बडा ही विचित्र होता है। यह भी शारीरिक सम्बन्ध के आधार पर दो भागों मे बाटा जा सकता है। एक वे समूह जो शारीरिक सम्बन्ध पर आधारित होते हैं। इनके लिये यह आवश्यक है कि समूह के सदस्य एक दूसरे के इतने निकट हो कि परस्पर देख सुन एव वार्तालाप कर सकें। दूसरे वे जिनमे किसी शारीरिक सम्बन्ध की आवश्यकता नहीं होती, परन्तु मानसिक सम्बन्धों का आधार रहता है। किसी न किसी विचार पर जिन व्यक्तियों के मस्तिष्क लगे होते हैं वे एक समूह बनाते हैं। ऐसे समूह को जनता (Public) कहते हैं। जिन असगठित समूहों का आधार शारीरिक उपस्थिति पर निर्भर रहता है, उन्हें भीड (Crowd) कहते हैं।

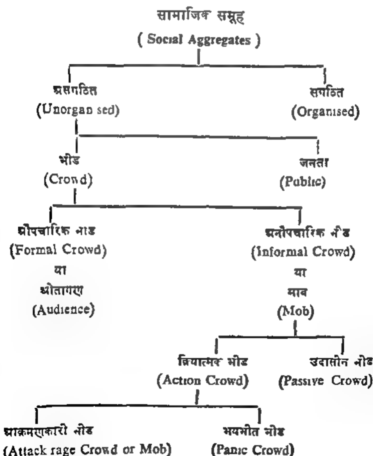
इस अध्याय मे भीड व्यवहार पर विशेषतया विचार करना है। भीड दो प्रकार की होती है—प्रथम अनौपचारिक (Informal) और द्वितीय औपचारिक (Formal or Institutionalized)। अनौपचारिक भीड मे किसी भी प्रकार

[1] विस्तृत अध्ययन के लिये प्रो० राम बिहारी सिंह तोमर की पुस्तक 'समाजशास्त्र की रूपरेखा' भाग १ में प्राथमिक परिभाषाओं का अध्याय पढ़िये।

की व्यवस्था अथवा रीतियो का पालन नहीं होता परन्तु औपचारिक भीड मे कुछ रीतियो का पालन होता है और एक निश्चित व्यवस्था पाई जाती है। औपचारिक भीड (Formal Crowd) को श्रोतागण (Audience) कहते हैं।

अनौपचारिक भीड और भी दो भागो मे विभक्त की जा सकती है—प्रथम आक्रमणकारी भीड या उपद्रवी भीड और दूसरी भयभीत भीड (Panic Crowd)।

इसको निम्न चार्ट द्वारा व्यक्त कर सकते हैं —



अध्याय ८

भीड़–व्यवहार

(Crowd-Behaviour)

भीड शब्द का प्रयोग हम दैनिक जीवन मे कई बार करते हैं। सन्ध्या हुई, पाँच बजे कि हजारों बाबू एव अफसर, कुछ साइकिलों पर, लोकसभा एव केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो से निकल कर लोकसभा मार्ग पर चलते हुए दिखाई पडते हैं। हमारे मुख से निकल पडता है "कितनी भीड है", परन्तु मनोवैज्ञानिक अर्थ में इसे भीड नहीं कह सकते। किंबाल यग ने लिखा है "भीड मनुष्यों के उस समूह को जो कि केन्द्र या सामान्य विचार के चारो ओर एकत्रित होता है, कहते हैं।"[1] इसके अनुसार भीड वह समूह है जो किसी एक विचार या कार्य की ओर केन्द्रित होता है। मान लीजिये दो साइकिलों मे भिडन्त हो जाती है और तमाम लोग उनके झगडे को देखने के लिये खडे हो जाते हैं, यह देखने वालों का समूह भीड कहलाएगा। इसकी तुलना चुम्बक के चारों ओर छितरे हुए लोहकणों से की जा सकती है। केवल मनुष्यों का समूह एक भीड का निर्माण नहीं कर सकता। इसके लिये किसी न किसी सामान्य विचार की ओर आकर्षित होना एक अत्यन्त आवश्यक तत्व है।

भीड शब्द का प्रयोग विभिन्न विद्वानो ने विभिन्न प्रकार से किया है। *लेबॉन (LeBon) ने भीड शब्द का प्रयोग बड़े ही विस्तृत अर्थों मे किया है।* उसके अनुसार शारीरिक उपस्थिति आवश्यक नहीं है। उसका विचार है कि भीड़ के लिये केवल एक आवश्यक तत्व यह है कि कुछ लोगों की भावनाएँ और विचार एक दिशा की ओर होने चाहिए और अन्त मे एक सामूहिक मस्तिष्क का निर्माण होना चाहिये। इसके अन्तर्गत भीड़, जनता, श्रोतागण, इत्यादि सभी आ जाते है। सर मार्टीन कोनवे (Sir Martin Conway) ने तो भीड

---

[1] "A crowd is a gathering of a considerable number of persons around a center or point of common attention" Kimball Young, 'Handbook of Social Psychology' p 387, Routledge & Kegan Paul Ltd, English Ed, Fifth Impression 1953.

शब्द से किसी भी उस समूह को, जो कि पृथक् एवं स्पष्ट अस्तित्व रखता हो, समझा। इसके अन्तर्गत आक्रमणकारी, भीड़, श्रोतागण, प्रजाति, साम्राज्य, राष्ट्र इत्यादि आते हैं।

आधुनिक विचारधारा के अनुसार मनोविज्ञान में हम इस शब्द का प्रयोग इन अर्थों में नहीं करते हैं। भीड़ के लिये यह आवश्यक है कि व्यक्तियों का एक समूह हो और उनकी शारीरिक उपस्थिति हो एवं किसी एक विचारधारा या कार्य पर ध्यान केन्द्रित हो। थाउलस ने भीड़ की परिभाषा निम्न शब्दों में की है 'भीड़ एक अस्थिर, एक दूसरे को स्पर्श करता हुआ समूह है जो कि किसी सामान्य रुचि के फलस्वरूप स्वतः बन जाता है और यहाँ तक असंगठित होता है कि उसकी सीमाएँ अत्यधिक पारगम्य होती हैं।[1]

भीड़ के आवश्यक तत्व

(Essential Conditions of a Crowd)

भीड़ को समझने के लिये उसके आवश्यक तत्वों को समझना उचित होगा। वे निम्नलिखित हैं —

(१) अभिस्पन्दन (Polarisation)

सर्वप्रथम समूह के सदस्यों का ध्यान एक केन्द्र पर केन्द्रित होना चाहिए। एक सामान्य रुचि ध्यान या कार्य का केन्द्र अवश्य होना चाहिए। जिस प्रकार एक चुम्बक के चारों ओर फैले हुए लोहकणों का आकर्षण केन्द्र चुम्बक होता है। उसी प्रकार से समूह के सदस्यों का आकर्षण केन्द्र होना अत्यावश्यक है। उदाहरणस्वरूप एक लड़का सुन्दर गीत गा रहा है और उसके चारों ओर भीड़ जमा हो जाती है। मार्शल बुल्गानिन और ख्रुश्चेव को देखने के लिए एकत्रित समूह का ध्यान उन पर केन्द्रित था इसलिये वह समूह भीड़ कहलायेगा। एक सामान्य रुचि, ध्यान या कार्य के किसी वस्तु पर केन्द्रित होने की प्रक्रिया को अभिस्पन्दन (Polarisation) कहते हैं।

(२) अस्थिर प्रकृति (Transitory Nature)

भीड़ की प्रकृति अति अस्थिर होती है। स्वतः एकदम से बन जाती है और थोड़े ही मिनटों या घण्टों के बाद छिन्नभिन्न हो जाती है। यह इतनी

[1] "A crowd is a transitory contiguous group, unorganised with completely permeable boundries spontaneously formed as a result of some common interest." Thouless, R. H., 'General & Social Psychology', p 258

अस्थिर होती है कि समूह शब्द का प्रयोग भी इसके लिये करना अनुचित है। लम्ले ने लिखा है "इसकी रचना इतनी अव्यवस्थित है कि हम इसे एक समूह भी तभी कह पाते हैं जब कि इस शब्द के अर्थ को कुछ विस्तृत करते हैं।[1] सड़क पर दो लोगों में झगडा हो गया और इस केन्द्र के चारो ओर भीड एकत्रित हो गई। जरा देर में दोनो लडने वाले चल दिये और भीड भी तितर बितर हो गई। पता नहीं इस भीड मे कौन था और कौन नहीं।

(३) असगठित (Unorganised)

भीड असगठित होती है। इसके कोई पूर्व निश्चित् उद्देश्य एव नियम नहीं होते। इसके नेता भी निश्चित् नहीं होते। इसकी कोई निश्चित् सदस्यता भी नहीं होती। भीड के सदस्यो को पूर्व निश्चित् उद्देश्य एव कार्य से एकत्रित नहीं किया जाता, न ही इनमे किसी प्रकार का, व्यवहारो के स्वरूप मे, सगठन ही होता है। जिसके जो मन मे आता है वह वैसा ही करता है।

(४) एक सामान्य उद्वेग (A Common Emotion)

भीड के लिये यह आवश्यक है कि उनमे एक सामान्य उद्वेग पाया जाय। यदि उनके मस्तिष्क मे समभाव और उनके मस्तिष्क की बनावट समान नहीं है तो वे एक भीड का निर्माण नहीं कर सकते। एक वक्ता भाषण दे रहा है और यदि उसको सुनने वाले उसकी भाषा को नहीं समझते और उनमे सम उद्वेग उत्पन्न नहीं होता तो ऐसा समूह भीड नहीं कहलायेगा। अत भीड के लिए सामान्य उद्वेग और विचारो का उत्पन्न होना और समस्या मे रुचि रखना आवश्यक तत्व है।

(५) पारस्परिक प्रभाव (*Mutual Influence*)

भीड के लिये मनुष्यो की सख्या उतनी आवश्यक नहीं जितनी कि पारस्परिक प्रभाव की स्थिति। भीड मे सदस्यो की मानसिक स्थिति एक विशेष प्रकार की हो जाती है। इस मानसिक स्थिति के फलस्वरूप सदस्य एक दूसरे को अपने व्यवहारों तथा विचारों से उत्तेजित करते हैं और वे एक दूसरे के व्यवहारो से प्रभावित एव उत्तजित भी होते हैं। सुझाव ग्रहण क्षमता अत्यधिक भयकर रूप मे काय करने लगती है।

---

[1] "Its texture is so loose that we may speak of it as a 'group' only by stretching this term somewhat" Lumley F E, 'Principles of *Sociology*', p 191. Mc Graw Hill Book Company, New York & London, Second Edition. Ninth Impression, 1935.

(६) स्थानीय वितरण (Spatial Distribution)

भीड के सदस्य एक स्थान पर पाये जाते हैं। उनकी शारीरिक उपस्थिति अनिवार्य है। यद्यपि आमने सामने (Face to face) का सम्बन्ध सरलता से सम्भव नहीं है, तथापि कन्धे से कन्धे का सम्बन्ध भीड़ मे अवश्य होना चाहिए।

(७) सामूहिक शक्ति की अनुभूति (Sense of Mass strength)

भीड मे सदस्यों को सामूहिक शक्ति का अनुभव होने लगता है। प्रत्येक सदस्य अपनी शक्ति का ही केवल अनुभव नहीं करता बलिक वह सम्पूर्ण भीड के सदस्यों की शक्ति को अपनी शक्ति मान बैठता है। इसके कारण उसका आत्मविश्वास कई गुना बढ जाता है।

अनौपचारिक भीड (Informal Crowd)

अनौपचारिक भीड दो प्रकार की होती है—प्रथम क्रियात्मक भीड (Action Crowd) और दूसरी उदासीन भीड (Passive Crowd)। उदासीन भीड वह भीड होती हैं जो केवल देखती या सुनती है परन्तु स्वय कोई कार्य नहीं करती जैसे बडे २ नेताओं एव महापुरषों को देखने एव सुनने के लिए एकत्रित भीड, किसी दुर्घटना के चारों ओर एकत्रित व्यक्ति, सिने भवन के सम्मुख लगे पोस्टरों को पढने एव देखने के लिये एकत्रित भीड इत्यादि। क्रियात्मक भीड वह भीड है जो उद्वगों से भरी हुई होती है और कुछ न कुछ कार्य करती है। इसको दो विभागों में विभक्त किया जा सकता है—एक आक्रमणकारी भीड (Attack rage) और दूसरी भयभीत भीड (Panic Crowd)। प्रथम के उदाहरण लूटमार, दगे, सामूहिक आक्रमण एव सामूहिक हत्याएँ हैं। दूसरी के उदाहरण सेना के भागते हुए सिपाही किसी हॉल मे आग लग जाय और उससे बचकर भागने वाले व्यक्ति इत्यादि हैं।

अनौपचारिक भीड की मानसिक विशेषताएँ
(Mental Characteristics of an Informal Crowd)

(१) बुद्धि का निम्न स्तर (Low degree of Intelligence)

भीड की प्रमुख एव आश्चर्यजनक विशेषता यह है कि बुद्धिमान से बुद्धिमान व्यक्ति भी भीड मे ऐसे कार्य करते हैं जो उनकी बुद्धि से कहीं निम्न स्तर के होते हैं। भीड सदैव निम्न स्तर की बुद्धि रखती है। जब समितियां लोकसभाएं और राज्य सभाएं, जिन मे किसी राष्ट्र के बुद्धिमान राष्ट्रनायक होते हैं,

त्रुटिपूर्ण निर्णय कर सकते हैं तो साधारण भीड का क्या कहना । भीड के सदस्य उद्वेगों मे बह जाते हैं और उन्हे निम्न स्तर के तर्क शीघ्र समझ मे आ जाते हैं । यह उनकी बुद्धि के निम्न स्तर के होने का प्रमाण है ।

भीड़ के निम्न स्तर के होने का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

(*Psychological Explanation of the low degree of* Intelligence of the Crowd)

(अ) निम्न स्तर की बुद्धि वालो का बहुमत

भीड मे सब प्रकार के व्यक्ति होते हैं । अधिकतर व्यक्ति निम्नस्तर की बुद्धि वाले होंगे । भीड से यदि कुछ करवाना है तो ऐसी बात करनी चाहिये जो सबके समझ मे आ जाय और वे उसकी प्रशसा करें । निम्नस्तर की बुद्धि वालों का बहुमत होता है अत निम्नस्तर के तर्क दिये जाते हैं । इस कारण से बुद्धिमान व्यक्तियों की बुद्धि का स्तर भी गिर जाता है ।

(आ) सामूहिक विचार विमर्श असम्भव है

दूसरा कारण भीड मे बुद्धि के निम्नस्तर के होने का यह है कि भीड मे सामूहिक विचार विमर्श नहीं किया जा सकता । विचार विमर्श, स्वतन्त्र वाद विवाद एव विचारो का आदान प्रदान आवश्यक तत्व हैं परन्तु भीड मे यह असम्भव है । नक्कार खाने मे तूती की आवाज कौन सुनता है ।

(इ) सुझाव-ग्रहण-क्षमता बढ जाती है

भीड मे सुझाव-ग्रहण क्षमता बढ जाती है । जो कुछ भी मत या विचार भीड की ओर से आता है वह सर्वमान्य होता है ।

(ई) उत्तेजना बढ जाती है

भीड में उत्तेजना अत्यधिक बढ जाती है और यह विचार करने की शक्ति को समाप्त कर देती है । इस कारण किसी बात पर विचार नहीं किया जा सकता ।

(उ) अनुकरण

भीड मे प्रत्येक व्यवहार का अनुकरण बडी तीव्र गति से होता है । इसके कारण जो भी कार्य प्रारम्भ हुआ उस पर बिना किसी विचार के लोग अनुकरण करते जाते हैं । इस प्रकार से भीड मे लोग बुद्धि से काम नहीं लेते हैं ।

भीड में इन कारणों से बुद्धि का स्तर गिर जाता है ।

(२) सामाजिक सौकार्य (Social Facilitation)

भीड मे सामाजिक सौकार्य अत्यधिक रूप मे पाया जाता है। सामाजिक सौकार्य (Social Facilitation) उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमे कि एक व्यक्ति की प्रतिक्रियायें दूसरे व्यक्तियों के उपस्थित रहने के कारण अधिक तीव्र गति से होती हैं। कन्धे से कन्धे की रगड लगने से आंख और कान की देखने तथा सुनने की क्रिया मे तीव्रता आ जाती है। ये सब प्रतिक्रियाओं की गति को बढा देते हैं। मिलर (Neal E Miller) और डोलर्ड (John Dollard) इसे भीड की प्रेरणा (Crowd Stimuli) कहते हैं। भीड मे व्यक्ति एकत्रित होते हैं और एक दूसरे को देखते हैं। इसके कारण उनके अन्दर कार्य करने की शक्ति बढ जाती है।

(३) उत्तजना (Emotionalism)

भीड उत्तेजना से पूर्ण होती है। उत्तेजना के कारण सुझाव ग्रहण क्षमता (Suggestibility) बढ जाती है। भीड की एकता का प्रमुख कारण उत्तेजना है। बर्नार्ड ने लिखा है "यह प्राय कोई शक्तिशाली उत्तजना या उद्वेग या विलक्षण प्रेरणा होती है जो भीड की एकता का निर्माण करती है।" [1]

उद्वेग द्वारा उत्तेजना इतनी बढ जाती है कि वह प्रत्येक कार्य को अति शीघ्र स्वीकार कर लेता है और वह अनुभव करता है कि उसकी शक्ति बढ गई है। यदि वह हँसता है तो बहुत जोर से, यदि कुछ कहना चाहता है तो चिल्लाता है, यदि क्रोध आता है तो मदान्ध हो जाता है। इन सबके कारण उसकी मानसिक स्थिति ऐसी हो जाती है कि वह किसी भी बात को तुरन्त स्वीकार करके कर डालता है।

(४) अचेतन प्रेरणाएं (The Unconscious Impulses)

आक्रमणकारी भीड केवल उद्वेगों एव उत्तेजनाओं द्वारा ही प्रेरित नहीं होती है, वल्कि अचेतन प्रेरणाएं भी इसे प्रेरणा देती हैं। साधारण अवस्था मे इन अचेतन प्रेरणाओं को व्यक्ति दबा देता है। इनका स्रोत अचेतन होता है। सिगमँड फ्रायड (Sigmund Freud) ने इन प्रेरणाओं को ईड-प्रेरणाएं (Id Impulses) कहा है। मनुष्य भीड मे एक विचित्र अवस्था मे होता

---

[1] "It is usually some strong emotion or curiosity impulse which integrates the crowd " Bernard, L. L , 'An Introduction to Social Psychology', p 458, Henry Holt & Co, New York, 1926.

है। वह उस स्वप्नावस्था मे होता है जिसमे विचार और कार्य दोनों मे मनुष्य डूब जाता है। इसके कारण सत्यता से दूर वह स्वच्छन्द एव अनुत्तरदायित्व की भावना का अनुभव करता है। जैसे स्वप्न मे कोई व्यक्ति कुछ कार्य करता है, और आँख खुलते ही वह उस पर विचार करके आश्चर्य करता है। उसी प्रकार भीड मे किये गये कार्यों पर आश्चर्य करना पडता है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि भीड में मनुष्यो को यह पता नहीं चलता कि वे क्या कर रहे है बल्कि सारी बौद्धिक एव सही व गलत सामाजिक धारणाए प्रेम दयालुता इत्यादि हानि करने की प्रेरणा द्वारा दबा दिये जाते हैं और उद्वेगवश होकर भीड मे सारे कार्य मनुष्य कर जाते है।

(५) उत्तरदायित्व की भावना का अभाव
(Lack of the sense of responsibility)

भीड के व्यक्तियों मे उत्तरदायित्व की भावना का अभाव रहता है। इस अभाव के कई कारण हैं। प्रथमत प्रत्येक व्यक्ति उत्तरदायित्व को सम्पूर्ण भीड पर डाल देता है। उत्तरदायित्व का विभाजन हो जाता है। भीड मे कौन किसको पहिचानता है। इसके कारण प्रत्येक व्यक्ति सोचता है कि जो कुछ भी मैं कर रहा हू उसे कौन देखता है और यदि कोई देखेगा भी तो उसका उत्तरदायित्व मेरे पर सिद्ध करना बडा कठिन कार्य होगा। मैकडूगल ने लिखा है कि अनुत्तरदायित्व की भावना केवल इस कारण से ही नहीं है बल्कि आत्मसम्मान की भावना के लोप हो जाने के कारण है। जब आत्मसम्मान की भावना नहीं रहती तो मनुष्य कुछ भी कर सकता है क्योंकि उसे अपमान का कोई डर नहीं रहता। भीड के व्यक्तियों के पास अन्त करण (Conscience) नहीं होता, इस कारण वे बुरे कार्यों को करने मे तनिक भी नहीं हिचकते हैं। अनुत्तरदायित्व की भावना इस कारण भी आ जाती है कि भीड अपने को सर्वशक्तिमान समझने लगती है। भीड के व्यक्ति अपने को अज्ञात समझते हैं। इस अज्ञात होने की अवस्था के कारण वे कुछ भी कर सकते हैं। रॉस ने उचित ही लिखा है 'अज्ञात होने की अवस्था के मुखावरण के कारण लोग अपनी भावनाओं का स्वतन्त्र प्रदर्शन करने के लिये अपने को स्वतन्त्र अनुभव करते हैं।" [1]

---

[1] "Masked by their anonymity, people feel free to give reign to the expression of their feelings." Ross E. A. 'Social Psychology', p 46.

(६) शक्ति का अनुभव (Sense of Power)

भीड़ एक विचित्र शक्ति का अनुभव करती है। उसके अन्दर यह भावना विकसित हो जाती है कि वह सर्वशक्तिमान है और जो कुछ चाहे कर सकती है। भीड़ का नेता शक्ति के इस अनुभव के कारण ऐसे सुझाव देता है और भीड़ उसे स्वीकार कर लेती है, जिसे साधारण परिस्थिति मे करने का स्वप्न भी नहीं देखा जा सकता। बरहम ने उचित कहा है "When the little heart is big, a little sets it off."[1]

(७) सुझाव-ग्रहण-क्षमता बढ़ जाती है
(Heightened Suggestibility)

भीड़ मे सुझाव ग्रहण क्षमता अत्यधिक बढ़ जाती है। सुझाव ग्रहण-क्षमता के विषय मे पहले लिख चुके हैं। भीड़ मे सुझाव-ग्रहण क्षमता बढ़ने के तीन कारण हैं —

(१) भीड़ की समूह के नाते प्रतिष्ठा बढ़ जाती है,
(२) नेता की प्रतिष्ठा पराकाष्ठा पर होती है,
(३) उद्वेगो से पूर्ण होने के कारण कोई भी विचार बिना सोच विचार के स्वीकार कर लिये जाते हैं।

(८) पारस्परिक उत्तेजना (Inter-Stimulation)

भीड़ मे पारस्परिक उत्तेजना भी एक महत्वपूर्ण कार्य करती है। दूसरों के व्यवहार को देखकर वैसा ही व्यवहार करने के लिये उत्तेजना किसी एक व्यक्ति को मिलती है। उस व्यक्ति के व्यवहार से उत्तेजना अन्य किसी को मिलती है। यह चक्र एक से दूसरे के पास पहुँचता रहता है और सब एक दूसरे से उत्तेजना ग्रहण करते रहते हैं। सिनेमा मे एक व्यक्ति सीटी बजाता है तो अन्य व्यक्ति भी बजाने लगते हैं। इन लोगों से उत्तेजना प्राप्त करके पहला व्यक्ति और जोर से सीटी बजाता है और इस व्यक्ति से उत्तेजना प्राप्त करके अन्य व्यक्ति भी सीटियां बजाते हैं। यह क्रम चलता रहता है। इसके कारण उत्तेजना का चढ़ाव बढ़ जाता है। मैक्डूगल ने लिखा है, "प्रत्येक व्यक्ति, (भीड़ मे) सब ओर भय के लक्षण, भय के कारण, श्वेत एवं विकृत चेहरे, फैली हुई पुतलियां, ऊँचे स्वर को कांपती हुई तालियां और अपने साथियों को

---

[1]Quoted by Sprott, W. J. H. 'Social Psychology,' Methuen & Co. Ltd., London 1952, p. 59.

भयपूर्ण चिल्लाहटों को देखता है और ऐसे प्रत्येक ज्ञान के अनुभव के साथ साथ उसकी स्वयं की प्रेरणाएं और उद्वेग उग्ररूप धारण कर लेते हैं।[१]"

सहज (६) विश्वास (Credulity)

भीड़ अत्यधिक सहज विश्वासी होती है। भीड़ के व्यक्ति सुझाव ग्रहण-क्षमता के बढ़ जाने के कारण विचारशक्ति को खो बैठते हैं। रॉस ने लिखा है, "विवेकशील विश्लेषण और परीक्षा का कोई प्रश्न नहीं उठता है। जिन शक्तियों के कारण हम शङ्का करते हैं वे सो जाती हैं।"[२]

इसके कारण भीड़ सहज विश्वासी होती है। सहज विश्वासी होने के कारण अफवाहें भीड़ द्वारा शीघ्र मानली जाती हैं और उसके अनुसार लोग कार्य करने लगते हैं। अफवाहें फैलाने के तीन प्रमुख साधन हैं—

(१) मौखिक रूप से—यह सबसे उत्तम साधन है।

(२) पत्र, टेलीफोन और तार द्वारा और

(३) समाचार पत्र, रेडियो, चलचित्र, पत्रिकाएं और पुस्तकों के द्वारा।

(१०) विचार शक्ति का अभाव (Lack of Volition)

भीड़ के कार्य अविवेकशील होते हैं। वे बिना सोचे समझे प्रत्येक कार्य करते हैं। उचित कार्य वह कार्य होता है जो सोच समझकर किया जाता है। भीड़ में सोचने की शक्ति नहीं होती, इस पर हम पहले ही प्रकाश डाल चुके हैं।

(११) अस्थायी उद्वेग और विचार

(Instable Emotions and Ideas)

भीड़ के विचार और उद्वेग अस्थायी होते हैं। किसी विशेष कार्य के लिये भीड़ अपना विचार बनाये तो यह नहीं कहा जा सकता कि वह उसे पूर्ण

---

[१] Each man (in a crowd) perceives on every hand the symptoms of fear, the blanched distorted faces, the dilated pupils, the high-pitched trembling voices, and the screams of error of his fellows, and with each such perception his own impulses and his own emotion rise to a higher pitch of intensity." McDougall, W. 'The Group Mind' Cambridge, 1920, p. 25.

[२] "Rational analysis and test are out of question. The faculties, we doubt with, are asleep. "Ross, E. A. 'Social Psychology,' p. 55.

करेगी ही। यदि मार्ग मे विचार परिवर्तित हो गया तो उस परिवर्तित विचार के अनुसार कार्य करने लगेगी। विचारों का परिवर्तन अति शीघ्र होता है। यहां तक कि उसके नेताओं तक की स्थिति डावाडोल रहती है। न जाने कब तक भीड उसका कहना माने। कभी कभी तो क्षणों मे परिवर्तन होते हैं। रास ने लिखा है, "एक क्षण जो उसका (भीड का) नायक है, दूसरे क्षण वही उसका शिकार (बलि) हो सकता है।"[१]

(१२) नेता का अनुसरण (Following of the Leader)

भीड मे नेता का प्रमुख स्थान रहता है और वह भीड को अत्यधिक उत्तेजना प्रदान करता है। प्रतिष्ठित सुझाव (Prestige Suggestion) के कार्य का उसमे अनुपम दृश्य मिलता है। नेता निम्न प्रकार की उत्तेजनाएँ प्रदान करता है.—(१) वह भीड का केन्द्र बन जाता है। इस केन्द्र के कारण भीड तितर बितर नहीं होने पाती। (२) वह लोगों के अस्पष्ट विचारों एवं भावनाओं को स्पष्ट शब्दो मे व्यक्त करता है और वह ही बाद को कार्य करने के लिये उत्तेजना देता है। (३) वह लोकक्थाओं, कहानियों एव दूसरी ऐसी परिस्थितियो का विवरण देता है जो कि उद्वेगों को उत्तेजित करती हैं। (४) वह सामूहिक क्रिया के लिये दिशा निर्देशित करता है (५) कभी कभी वह स्वय कार्य का नेतृत्व करता है।

भीड मे नेता का कार्य अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी। लेपियर और फ्रान्सवर्थ लिखते हैं —"इस प्रकार नेतृत्व न लाभदायक ही है और न इसके विपरीत।"[२]

(१३) आत्म उत्तेजना (Self-Stimulation)

हमें आत्म-उत्तेजना भी भीड मे प्राप्त होती है और यह एक प्रमुख कार्य करती है। नेता और दूसरे व्यक्तियों की बात का अनुमोदन जब अपने अन्तःकरण द्वारा होता है तो उत्तेजना की आन्तरिक लहर दौडने लगती है।

---

[१] 'Its hero one moment may be its victim the next" Ross, E A 'Social Psychology', p. 54.

[२] "As such, leadership is neither advantageous nor the reverse." Lapiere and Fransworth, 'Social Psychology' McGraw-Hill Publications, 3rd Edition 1949, p 468.

(१४) भीड़ की अनैतिकता (Immorality of the Crowd)

भीड़ अनैतिक होती है। बहुत से विद्वानों का मत है कि भीड़ में व्यक्ति आचार रहित हो जाते हैं और वे उत्तरदायित्व-हीन व्यवहार करते हैं। किम्बॉल यंग ने लिखा है, "वह संयुक्त व्यवहार मे केवल अनुरूपता की भावना ही नहीं पाता बल्कि एक प्रकार की अभिमति (Sanction) भी पाता है।" १

इस शक्ति की अनुभूति से मदान्ध होकर एवं विचार शक्ति के लोप होने के कारण वह आचार रहित एवं अनैतिक व्यवहार करता है। व्यवहार समाप्त होने के उपरान्त जब भीड़ से पृथक् वही लोग एकान्त मे होते हैं तो अपने किये कार्यों पर स्वयं पश्चाताप करते हैं, परन्तु भीड़ मे वे अपने व्यवहार को हर प्रकार से उचित सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। सामाजिक निषेध समाप्त हो जाते हैं और भीड़ स्वच्छन्दता के सागर मे लीन हो जाती है।

कुछ विद्वानों का मत है कि भीड़ का व्यवहार नैतिक या अनैतिक दोनों ही प्रकार का हो सकता है। यह दिशा निर्धारण का कार्य नेता का है। अतः भीड़ को अनैतिक न कहना चाहिये। जिन्सबर्ग ने लिखा है, "भीड़ स्वतः न तो अच्छी है और न बुरी ही, परन्तु भीड़ एक प्रकार की या दूसरे प्रकार की, समयानुसार जिस प्रकार की भी उत्तेजना होती है, बन जाती है। भीड़ निर्दयी भी हो सकती है परन्तु वह कृपालु और सहानुभूति से परिपूर्ण भी हो सकती है।" २

जिन्सबर्ग का मत निःसन्देह सत्य है, फिर भी यह कहना पड़ता है कि क्रियाशील भीड़ और विशेषतया आक्रमणकारी भीड़ अनैतिक होती है क्योंकि उनका व्यवहार साधारणतया विनाशकारी होता है। नेता निश्चित् ही एक प्रमुख भाग लेता है तो भी उसे भीड़ के उद्वेगों का ध्यान रखना पड़ता है और यदि वह ऐसा नहीं करता तो उसका नेतृत्व ही समाप्त हो जाता है।

---

१ "He finds in joint action not only a sense of conformity but a certain sanction." Young, K. 'Handbook of Social Psychology', Routledge & Kegan Paul Ltd, London, Fifth Impression 1953, p. 398.

२ "Crowds are in themselves neither good nor evil, but they may be either the one or the other on occasions according to the stimulus. Crowds may be brutal, but they may also be generous, sympathetic." Ginsberg M. 'The Psychology of Society,' p. 133.

(१५) भीड अति निम्न प्रकार की मानव समिति है

(Crowd is the lowest form of human Association)

कुछ विद्वानों का मत है कि भीड मानव समितियों का अति निम्न प्रकार है। रॉस ने लिखा है "निश्चित रूप से अपने पूर्वजों के समान और भावहीन (होने के कारण) भीड को गणना अति निम्न प्रकार की मानव समितियों मे की जाती है।"[१] इसी मत का समर्थन बर्नार्ड ने भी निम्न शब्दो मे किया है, "वे (भीड) लगभग निम्न पशुओं के झुण्ड से मिलती जुलती हैं।"[२]

इन विद्वानों ने भीड के एकाकी व्यवहार को देखकर यह काला चित्र चित्रित किया है। वास्तव मे इससे पूर्णतया सहमत नहीं हुआ जा सकता। भीड मानव के लिये आवश्यक एव सुखदायक भी है। भीड़ द्वारा ऐसे कार्य किये जा सकते हैं जो और किसी प्रकार भी पूर्ण नहीं हो सकते। अन्याय और अत्याचार से मुक्ति प्राप्त करने के लिये भीड का ही सहारा लेना पड़ता है। भीड अत्याचारी एव अनैतिक होने की अपेक्षा सहानुभूति से परिपूर्ण, प्रसन्नता से भरी हुई एव रगीली और रूपहली और प्रफुल्लचित्त भी होती है जैसे विवाहोत्सव, राजनैतिक सभा, मनोरंजन पार्टियां (Picnics) इत्यादि।

मेले हमारे जीवन मे एक विशेष महत्व रखते हैं और जीवन को आह्लाद पूर्ण बना देते हैं। रेनहार्ट ने उचित ही लिखा है, "जीवन बिना भीड़ के नीरस हो जायगा।"[३]

भीड और हिंसक भीड़ मे अन्तर

(Distinction between Crowd and Mob)

भीड मे और हिंसक भीड मे केवल अशों का अन्तर है। दोनो मे अन्तर का विवरण देते हुये रेनहॉर्ट ने लिखा है, "हिंसक भीड (Mob) साधारण भीड से भिन्न, अविवेकशील एव हिंसक क्रियाओं की विशेषता द्वारा पहिचानी जाती है।"[४]

---

[१] "Essentially atavistic and sterile, the crowd ranks as the lowest form of human association." Ross, E. A., 'Social Psychology', p 56.

[२] "They approximate most closely to the packs and herds of the lower animals" Bernard, L L., Introduction to Social Psychology' p 458, Henry Holt & Co, New York, 1926

[३] "Life would be dreary indeed without crowds" Reinhardt, J. M, 'Social Psychology,' p 208.

[४] The Mob then, as distinguished from the ordinary

क्रियाशील भीड को दो भागो मे विभक्त किया है—एक आक्रमणकारी भीड और दूसरी भयभीत भीड। आक्रमणकारी भीड को हिंसक भीड (Mob) कह सकते हैं।

श्रोतागण (Audience)

भीड का विभाजन दो भागों मे किया जा चुका है—एक तो औपचारिक भीड (Formal Crowd) और दूसरी अनौपचारिक भीड (Informal Crowd) औपचारिक भीड (Formal Crowd) को ही श्रोतागण (Audience) शब्द से सम्बोधित करते हैं।

किबॉल यग ने श्रोतागण की परिभाषा इन शब्दो मे की है, "श्रोतागण एक प्रकार की सस्था के सिद्धान्तो पर आधारित भीड है।"[1]

श्रोतागण वह भीड है जो निश्चित् नियमो पर आधारित होती है। इसका उद्देश्य अधिकाश मात्रा मे निश्चित् होता है। इसका समय और स्थान भी पूर्व निश्चित् होता है।

श्रोतागण का वर्गीकरण (Classification of Audience)

श्रोतागण का वर्गीकरण बडा कठिन है, फिर भी विभिन्न लेखको ने विभिन्न वर्गीकरण किये हैं। किबाल यग ने इसको दो भागों मे बाटा—पहला सूचना प्राप्त करने वाला (Information Seeking) और द्वितीय मनोरञ्जन पाने वाला (Recreation Seeking)। लेपियर ने एक भाग और जोड दिया और वह विचार परिवर्तन हेतु श्रोतागण (Conversional Audience) है। इस के अतिरिक्त लेपियर ने दो प्रकार के भेद और बताये—प्रथम नाटकीय श्रोतागण (Dramatic Audience) और द्वितीय भाषण श्रोतागण (Lecture Audience)। समाजशास्त्र इनको कार्य एव उद्देश्य के अनुसार आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एव मनोरञ्जक विभागों मे बाँटता है। इसको निम्न चार्ट द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

श्रोतागण की विशेषतायें
(Characteristics of the Audience)

इसकी निम्न विशेषताए होती हैं —

---

crowd is characterised by irrational and violent action." Reinhardt, J. M , 'Social Psychology,' p 207

[1] "The Audience is a form of institutionalized crowd " Young, K ibid, p. 399

श्रोतागण

(Audience)

- Kimbal Young's (किम्बाल यंग के अनुसार)
  - (Information Seeking) सूचना प्राप्त करने वाला
  - (Recreation Seeking) मनोरंजन प्राप्त करने वाला
  - (Conversional) विचार परिवर्तन हेतु
- Lapiere's (लेपियर के अनुसार)
  - (Dramatic) नाटकीय
  - (Lecture) भाषण
  - (Conversional) विचार परिवर्तन हेतु
- Sociologist's (अन्य समाजशास्त्रियों के अनुसार)
  - (Cultural) सांस्कृतिक
  - (Economic) आर्थिक
  - (Political) राजनैतिक
  - (Religious) धार्मिक
  - (Recreational) मनोरंजक

(१) इसका एक निश्चित उद्देश्य होता है
(It has a definite aim)

श्रोतागण एक निश्चित उद्देश्य से बुलाये जाते हैं। उदाहरणस्वरूप पण्डित नेहरू चुनाव के दौरे पर अजमेर आये। उनके आने पर चारों तरफ सभा की सूचना दी जाती है। इस सभा का उद्देश्य निश्चित होता है। इसी प्रकार से प्रत्येक श्रोतागण का एक निश्चित उद्देश्य होता है।

(२) श्रोतागण पूर्व निश्चित समय और स्थान पर एकत्रित होता है
(The audience assembles at previously fixed time & place)

श्रोतागण पूर्व निश्चित स्थान एव समय पर एकत्रित होते हैं क्योंकि इसकी सूचना पहले से दे दी जाती है और लोग उसी सूचना के आधार पर एकत्रित होते हैं।

(३) अभिस्पन्दन का एक निश्चित आदर्श स्वरूप होता है
(It has a standard form of polarisation)

अभिस्पन्दन का एक आदर्श स्वरूप श्रोतागण मे पाया जाता है। इसके लिये एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था करनी पड़ती है। अभिस्पन्दन से तात्पर्य यह है कि श्रोतागणों का ध्यान वक्ता पर केन्द्रित होना चाहिये। इस ध्यान को वक्ता पर केन्द्रित करने के लिये निम्नलिखित बातों को ध्यान मे रखना चाहिये:—

(अ) सभा के स्थान के भौतिक लक्षण

(i) बैठने की व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि वक्ता सबके निकट हो। (ii) वक्ता का स्थान ऊंचा होना चाहिये जिससे सब लोग उसे आसानी से देख सकें। (iii) रोशनी का प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि एकत्रित व्यक्ति उद्वेगों मे बहने लग जाय। (iv) सभा का भवन ऐसा होना चाहिये कि खचाखच भराहो। यदि कम लोगों के आने की सम्भावना है तो छोटे भवन का प्रबन्ध करना चाहिये। साधारणतया भीड़-भाड़ दिखाई देनी चाहिये। (v) भवन की सजावट, तापमान, हवा का प्रबन्ध इत्यादि भी श्रोतागण पर प्रभाव डालते हैं।

(ब) प्रबन्धको द्वारा प्रारम्भ कार्यक्रम

श्रोतागण का अधिक से अधिक ध्यान आकर्षित करने के लिये, प्रबन्धकों द्वारा किस प्रकार कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाता है, एक अति महत्वपूर्ण तत्व है।

(स) वक्ता या कार्य करने वाले का प्रभाव

ध्यान आकर्षित करने मे सबसे अधिक भाग वक्ता या कार्य करने वाले का होता है यदि वह नेतृत्व को स्थापित रख सके तो सब कुछ ठीक प्रकार से होता है।

श्रोतागण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

(Psychological analysis of the Audience)

श्रोतागण और नेता के पारस्परिक प्रभाव मे मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं कार्य करती हैं। उनको हम निम्न प्रकार से समझा सकते हैं:—

(१) प्रारम्भिक मनोभाव का निर्माण (Preliminary tuning)

किसी भी श्रोतागण के लिये यह आवश्यक है कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये प्रारम्भिक मनोभावो का निर्माण करे। इसके लिये प्रचार के विभिन्न साधनो का प्रयोग करना पड़ता है। इसके द्वारा लोगों की जिज्ञासा को जागृत करना पड़ता है।

(२) श्रोतागण की प्रारम्भिक प्रतिक्रियाये

सभा शुरु होने के पूर्व एक पूर्व निश्चित् विधि या रीति के अनुसार श्रोतागणों का ध्यान केन्द्र की ओर आकर्षित करना पड़ता है। उदाहरण-स्वरुप किसी भाषण के पूर्व वक्ता का परिचय कराया जाता, उसे माला पहिनाना एव बन्दना करना इत्यादि।

(३) सम्बन्ध स्थापित करना एव बनाये रखना

इसके उपरान्त उस ध्यान को केन्द्र पर बनाये रखने का कार्य वक्ता या कार्य करने वाले का होता है। वह अपनी युक्तियों द्वारा इसको बनाये रखता है। बीच बीच मे हँसी, गीत एवं अन्य वस्तुएं जिनके द्वारा श्रोतागण केन्द्र पर ध्यान बनाये रखें, प्रयोग में लाई जाती हैं।

(४) सुझाव देना और उसको स्वीकार करवाना

उद्वेगों पर आधारित, परन्तु देखने मे तर्कपूर्ण, युक्ति प्रस्तुत करनी चाहिये और इसे श्रोतागणों के सांस्कृतिक आधार पर रख कर स्वीकार करने के लिये सरलता से उन्हें बाध्य करना चाहिये।

(५) कार्य करने के लिये उत्तेजना

कई बार श्रोतागणों को कार्य करने के लिये भी उत्तेजना दी जाती है।

जब वे कार्य करने लगते हैं तो भीड़ श्रोतागण से क्रियाशील भीड़ में परिवर्तित हो जाती है।

भीड़ और श्रोतागणों में अन्तर
(Distinction between Audience and Crowd)

श्रोतागण (Audience)	अनौपचारिक भीड़ (Informal Crowd)
(१) इसका निश्चित् उद्देश्य होता है।	(१) इसका उद्देश्य पूर्व निश्चित् न होता।
(२) ये एक निश्चित् समय एवं स्थान पर एकत्रित होते हैं।	(२) इसमें कुछ भी निश्चित् न होता।
(३) उसे इच्छापूर्वक बुलाया जाता है।	(३) यह स्वय एकत्रित हो जाती।
(४) इसमें ध्यान एक बाहरी केन्द्र पर केन्द्रित होता है और उसके सदस्य एक दूसरे की उपस्थिति या व्यवहार से प्रयोजन नहीं रखते।	(४) इसमें केन्द्र भीड़ में ही होत और एक दूसरे से उत्तेजना मिलती रहती है।
(५) इसके व्यवहार निश्चित् रीतियों के अनुसार होते हैं।	(५) इसका व्यवहार अनिश्चित है।

भीड़ व्यवहार की व्याख्या
(Explanation of Crowd Behaviour)

भीड़ व्यवहार व्यक्तिगत व्यवहार से विभिन्न होता है। भीड़ व्यवहा व्याख्या एव विश्लेषण करने का अनेक विद्वानो ने प्रयत्न किया है सिद्धान्तो का प्रतिपादन भी किया है। उसमे से कुछ प्रमुख सिद्धान्तों विचार करेंगे।

(१) समूह मस्तिष्क का सिद्धान्त (Thesis of Group Mind)

लेबॉन (Le-Bon) तथा अन्य लेखकों का मत है कि भीड़ का मस्तिष्क निर्मित हो जाता है जो कि उन व्यक्तियों के मस्तिष्क से हैं जो भीड के सदस्य होते हैं। लेबॉन ने सामूहिक चेतना के वि मानसिक एकता का सिद्धान्त (Low of the mental unity) लि

लेबॉन ने इस विचार को अपनी पुस्तक "दी क्राउड" में निम्न प्रकार से व्यक्त किया है 'कुछ निश्चित् परिस्थितियों में और केवल उन्हीं परिस्थितियों में मनुष्यों का समूह नवीन विशेषताएँ प्रस्तुत करता है जो कि समूह के सदस्यों की विशेषताओं से भिन्न होती हैं। भीड़ के समस्त व्यक्तियों के उद्वेग और विचार एक ही दिशा में बहने लगते हैं और उन मनुष्यों का जागरूक व्यक्तित्व *समाप्त हो जाता है। एक सामूहिक मस्तिष्क का निर्माण हो जाता है जो कि* निस्सन्देह ही अस्थिर होता है परन्तु निश्चित् एवं स्पष्ट विशेषताओं को प्रस्तुत करता है। यह समूह एक मनोवैज्ञानिक भीड़ बन गया है वह एक प्राणी का रूप धारण करता है और भीड़ की मानसिक एकता के सिद्धान्त के आधीन होता है।"[१] समूह मस्तिष्क की कल्पना विचित्र है। समूह के पास एक व्यक्ति के समान मस्तिष्क कैसे हो सकता है जबकि समूह स्वयं एक प्राणी नहीं है। रेनहार्ट ने उचित ही लिखा है, 'यह माना जाता है कि कोई भी स्वस्थ्य मस्तिष्क का व्यक्ति यह विश्वास नहीं करता कि भीड़ मस्तिष्क, महत्वपूर्ण अहं के रूप में, वातनाड़ी मण्डल से भिन्न और पृथक स्वरूप में रहता है।"[२]

यह सिद्धान्त आधुनिक युग में बिल्कुल ही स्वीकार नहीं किया जाता। *समूह मस्तिष्क की धारणा अनुचित एवं मिथ्या है।* इस व्याख्या द्वारा भीड़ व्यवहार का विश्लेषण अवैज्ञानिक है।

निरुद्ध चालकों की मुक्ति का सिद्धान्त

(The thesis of release of repressed drives)

फ्रायड तथा उसके अनुयायियों ने निरुद्ध चालकों की मुक्ति का सिद्धान्त

---

[१] 'Under certain given circumstances, and only under those circumstances an agglomeration of men presents new characteristics very different from those of the individuals composing it The sentiments and ideas of all the persons in the gathering take one and the same direction, and their conscious personality vanishes A collective mind is formed doubtless transitory but presenting very clearly *defined* characteristics. The gathering has thus become a psychological crowd It forms a single being, and is subjected to the *law of the mental unity of crowds*." Le Bon, G 'The Crowd,' p. 1., *English translation*

[२] It is assumed that no sane individual believes that a mob mind exists as a form of transcendent ego separate and apart from nervous tissue", James Reinhardt, 'Social Psychology' p 206.

प्रतिपादित किया है। उनका मत है कि भीड में मनुष्य की प्रवृत्तियों और चालकों का प्रबन्ध टूट जाता है। इसे दूसरे शब्दों मे हम इस प्रकार कह सकते हैं कि मनुष्य चेतन अवस्था मे नहीं रहता। साधारण व्यवहार चेतनावस्था के कारण नियन्त्रित और आचार के अनुसार होता है परन्तु वे विचार, जो मूल प्रवृत्तियों के कारण उत्पन्न होते हैं और सामाजिक नियन्त्रण के कारण चेतनावस्था मे दबा दिये जाते हैं, समाप्त नहीं होते बल्कि अचेतन मस्तिष्क मे बन्दी हो जाते हैं। भीड मे अचेतन मस्तिष्क, चेतनता नष्ट होने के कारण, सक्रिय हो जाता है और इन दबे हुए एव निरुद्ध चालको को मुक्ति मिल जाती है और वे मनुष्य के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। इस कारण भीड़ का व्यवहार व्यक्तिगत व्यवहार से भिन्न होता है।

फ्रायड तथा उसके अनुयायियों ने निम्न श्रेणी के पशु व्यवहार से इसकी व्याख्या की है। यद्यपि यह सिद्धान्त भीड व्यवहार पर कुछ प्रकाश डालता है तथापि यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि भीड मे मनुष्य केवल इन निरुद्ध चालकों द्वारा निर्देशित होता है।

सामाजिक दशा का सिद्धान्त (The thesis of social situation)

भीड के व्यवहार और सामाजिक एव सास्कृतिक दशा मे घनिष्ठ सम्बन्ध दिखाई पडता है। सास्कृतिक छाप भीड पर अत्यधिक पाई जाती है। जिस प्रकार का समाज होगा उसी प्रकार की उस समाज के अन्तर्गत होने वाली भीडें भी होंगी।

इस सिद्धान्त के द्वारा भी भीड व्यवहार की व्याख्या उचित रूप से नहीं हो पाती।

बहुकारक सिद्धान्त (Theory of Multiple factors)

वास्तव मे भीड व्यवहार को किसी भी एक सिद्धान्त से नहीं समझाया जा सकता। भीड का व्यवहार व्यक्तियों के व्यवहार से क्यों भिन्न होता है इसके लिये व्यक्तियों की मानसिक अवस्था पर विचार करना होगा। प्रथम तो भीड मे व्यक्तियों की सुझाव-ग्रहण समता अत्यधिक मात्रा मे बढ़ जाती है और विचार करने की शक्ति कम हो जाती है। भीड एक विभिन्न प्रकार की परिस्थिति प्रस्तुत करती है। भीड मे उत्तरदायित्वहीन भावना भी अनैतिक व्यवहार करने के लिये उत्साहित करती है उद्वेग मनुष्य को पागल बना